संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१४
वर्ष : २४ अंक : २
(निरंतर अंक : २६०)

जोधपुर में दिखे आस्था और निष्ठा के अभूतपूर्व नजारे

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू
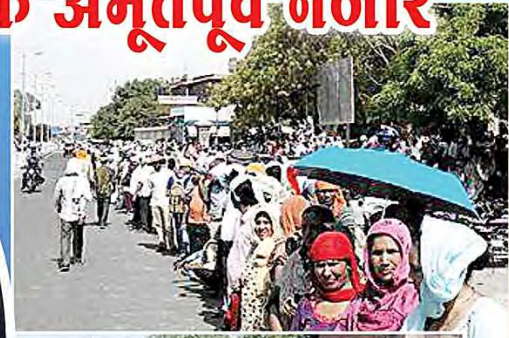
देखनेवाले सोचने पर मजबूर हैं कि आखिर ऐसा क्या मिला है इन भक्तों को अपने सद्गुरु से ? ऐसे क्या अनुभव हुए हैं इन भक्तों के जीवन में, जो इतने कष्ट सहकर भी ये अपने सद्गुरु की एक झलक पाने के लिए तरसते हैं ?
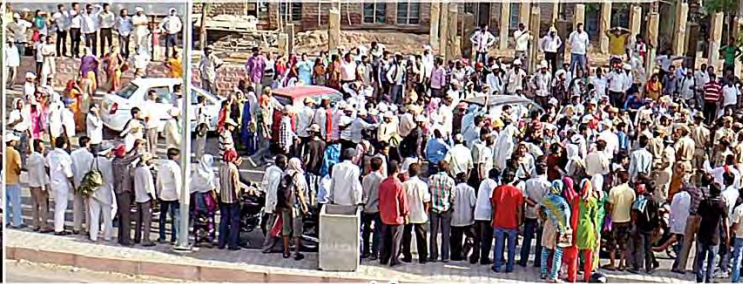
जोधपुर में भी गुरुपूर्णिमा पर उमड़ा भक्तों का सागर

देश-विदेश में हजारों स्थानों पर मनाये गये गुरुपूर्णिमा महापर्व की कुछ झलकियाँ

जोधपुर (राज.)

टोरंटो

करोलबाग-दिल्ली

न्यूजर्सी

सूरत

जम्मू

हैदराबाद

बोस्टन

बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

आगरा (उ.प्र.)

लखनऊ

वॉशिंगटन

गोधरा (गुज.)

पंचेड़ (म.प्र.)

भावनगर (गुज.)

गोरखपुर (उ.प्र.)

बदलापुर, जि. ठाणे (महा.)

अहमदनगर (महा.)

जयपुर (राज.)

बड़ौदा (गुज.)

फाजिल्का, जि. फिरोजपुर (पंजाब)

हरिद्वार

पुष्कर (राज.)

बोईसर (महा.)

रायकेरा, जि. सिमडेगा (झारखंड)

जौनपुर (उ.प्र.)

कानपुर (उ.प्र.)

पौंटा साहिब (हि.प्र.)

(आवरण पृष्ठ ३ भी देखें।)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़,अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २४ अंक : २
भाषा : हिन्दी(निरंतर अंक : २६०)
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१४
मूल्य : ₹ ६
श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क
'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ **इस अंक में** ॐ ॐ ॐ

आपका सेवारूपी फूल खिला है - पूज्य बापूजी

विदेशी ताकतें हिन्दू धर्म की महानता को समाप्त करने के लिए, हिन्दू साधुओं का कुप्रचार करने के लिए चैनलों में न जाने कितनों-कितनों का क्या-क्या दिखाती हैं ! आजकल तो हिन्दू धर्म, हिन्दू साधु-संतों को बदनाम करने के लिए कैसे-कैसे अनर्गल आरोप लगाते हैं। हिन्दू साधु-संतों के पीछे आजकल कुप्रचार करनेवाले हाथ धो के पड़ गये हैं।

इतना-इतना अंग्रेजों ने जुल्म किया लेकिन हिन्दू धर्म की महानता से हमने उनके जुल्म को उखाड़ के फेंक दिया। इसीलिए अब तो बोलते हैं कि 'हिन्दू धर्म की जड़ें काटो। ये वैदिक बातें ऐसी ही हैं... हनुमानजी बंदर हैं, गणपतिजी हाथी हैं... ।' ऐसा करके वे श्रद्धा तोड़ने का धंधा करते हैं, बच्चों की श्रद्धा बहुत तोड़ते हैं। श्रद्धा के बिना धर्म-लाभ नहीं होता।

परंतु इससे घबराना नहीं है। अक्सर ऐसे आँधी-तूफान आते रहते हैं। अपने को बुद्धिमान होकर, संगठित हो के अपनी संस्कृति का फायदा उठाना चाहिए। हमको विदेशी शक्तियाँ लड़वाना चाहती हैं और यदि हम वही करें तो फिर हमारी संस्कृति की हानि होगी। मुझे तो एक दृष्टांत-कथा याद आती है कि कुल्हाड़ी का सिर आया पेड़ के पास, बोला : "मैं तुझे काट दूँगा।"

पेड़ हँसा, बोला : "मैं २०० मन का, तू ४०० ग्राम का; निगुरे ! चल भाग यहाँ से।"

थोड़ी देर के बाद वह लकड़ी का हत्था डलवा के आया, बोला : "क्या खयाल है अब ?"

पेड़ ने सिर झुका दिया, बोला : "जब अपनेवाले ही काटनेवाले के साथ जुड़ते हैं तो क्या होगा ?"

ऐसे ही जो विदेशी ताकतें हमारे देश को तोड़ना चाहती हैं उन्हींके हम हत्था बन के कुछ पैसे लेकर किसी संस्था के पीछे पड़ जायें तो हमारी संस्कृति का क्या होगा ? मैं तो हाथ जोड़ के प्रार्थना कर सकता हूँ। नहीं तो फिर मैं उसको प्रार्थना करूँगा कि 'भगवान ! इनको सद्बुद्धि दो।' फिर प्रकृति कोप करे या तो सद्बुद्धि दे, यह उसकी मर्जी की बात है। जो भिड़ानेवाली ताकतें पर्दे के पीछे से भिड़ाती हैं, वे भिड़ायें और हम भिड़ते रहें तो हमारी संस्कृति की हानि होती है।

कवि गेटे के लिए ऐसे आँधी-तूफान आये कि उनके अनुयायियों ने कहा कि "अब हद हो गयी !

आप निंदा करनेवालों को, अफवाहें फैलाने और साजिश करनेवालों को कुछ दंड दो अथवा हमें आदेश दो, हमारे से सहा नहीं जाता !''

कवि गेटे ने मुस्कराते हुए कहा : ''देखो, मैं तुम्हें सुनाता हूँ 'टॉलस्टॉय' की कविता ।'' कवि गेटे कविता सुनाते गये और गद्गद होते गये । कविता का भाव यह था कि 'जब तुम्हारे लिए कोई साजिश रचे, तुम्हारे ऊपर मिथ्या दोषारोपण होने लगें, तुम्हारे दैवी कार्य में विघ्न-बाधाएँ आने लगें तो समझ लेना कि तुम्हारी सेवा का बगीचा खूब महका है और उसकी सुवास और मधुरता दूर तक गयी है इसलिए वे मधुमक्खियाँ और भौंरे डंक मारने को आ रहे हैं । अरे ! तुम्हारी सेवा का ही प्रभाव है जो मधुमक्खियाँ और भौंरे भिनभिना रहे हैं ।'

हिन्दू धर्म को बदनाम करनेवाले, साजिश करनेवाले विदेशी लोग जो अपना धर्मांतरण का काम चलाना चाहते हैं, वे पिछले १७०० वर्षों से हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने का षड्यंत्र चला रहे हैं और वे लड़ाने के लिए हिन्दुओं को ही आगे करते हैं, वे लोग पर्दे के पीछे रहते हैं, जिससे हिन्दू ही हिन्दू धर्म की निंदा करें और हिन्दू-हिन्दू आपस में लड़ मरें । वे सोचते हैं, 'हिन्दुओं का नाम, प्रभाव रहेगा तो हिन्दू धर्म में तो महान गुण हैं, हमारे पास कौन आयेगा ? इसलिए चलो, हिन्दू धर्म को बदनाम करो और अपना धंधा चलाओ ।' ऐसा मुझे कई ढंग से पता चल रहा है । शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी, स्वामी नित्यानंदजी और माँ अमृतानंदमयी जैसे कई संतों को बदनाम करवाया गया । जो प्रसिद्ध हैं उनको ज्यादा बदनाम करवाते हैं और जो कम प्रसिद्ध हैं वे बेचारे थककर आश्रम, मंदिर छोड़ के चले जाते हैं, दूसरे लोगों को दे जाते हैं ।

मेरे ५० साल में ऐसा कुप्रचार २-४ बार आया और जब-जब कुप्रचार आया उसके बाद साधकों की संख्या बढ़ती गयी । लेकिन अब का कुप्रचार बहुत लम्बी साजिश है, खूब पैसे खर्च करके हुआ है और बहुत लोगों को इसमें जोड़ा गया है । अब के कुप्रचार का जो शिकार न बने और टिक गया तो भाई ! वह तो फिर पृथ्वी पर का देव है ।

और हम जानते हैं कि जितना-जितना आदमी ऊँचाई को उठता है, उतना-उतना सज्जन लोग तो फायदा लेते हैं लेकिन जिनको ईर्ष्या की आग तपाती रहती है वे फिर कुछ-न-कुछ कल्पना करके आरोप की गंदगी फैलाते रहते हैं । आपके ऊपर भी कभी कोई ईर्ष्या-द्वेष करके आरोप करे तो आप इस बात को याद करो कि आपका फूल खिला है, तभी भौंरे अथवा मधुमक्खी का डंक आया है । आपका फूल विकसित हो रहा है ।

पूज्य बापूजी का साधकों को संदेश

जोधपुर न्यायालय में पेशी के दौरान पूज्य बापूजी द्वारा मीडिया के माध्यम से दिये गये संदेश :

'मेरे किसी साधक का कोई दोष नहीं'

साधकों को आपस में एकजुट रहने हेतु तथा आपसी फूट डालनेवालों से बचने के लिए ९ जुलाई का पूज्य बापूजी का संदेश : ''पॉक्सो कानून ही ऐसा है कि जिसमें जमानत मिलने में समय लग रहा है। मेरे किसी साधक या संचालक का इसमें कोई दोष नहीं है। मेरा यह संदेश सभी साधकों तक पहुँचाना, सभी साधक संगठित रहें, एकजुट रहें।''

'सत्य की जय होगी'

पूज्य बापूजी ने गुरुपूर्णिमा के पूर्व कहा था : ''गुरुपूर्णिमा आ रही है, लाखों-करोड़ों भक्त बेचारे बेचैन हो रहे हैं। आप लोग हमारी तबीयत की चिंता नहीं करना, इतनी उम्र है तो तबीयत ठीक-बेठीक होती रहती है। आप लोग जहाँ हैं वहीं मानसिक जप करें, साधन-भजन करें। सत्य की जय होगी, आपकी तपस्या की जय होगी। भगवान सबका मंगल करें।''

'भक्त दुःखी नहीं हों'

''भक्तों की जो सहनशक्ति है, धैर्य है, उसको खूब-खूब धन्यवाद है। यह कलियुग है, होता रहता है ऐसा (झूठे आरोप लगाये जाना, निर्दोषों को सताया जाना आदि); भक्त दुःखी नहीं हों, तंदुरुस्त रहें, प्रसन्न रहें।''

'डिवाइड एंड रूल वालों की चाल'

लाख कोशिशों के बावजूद साधकों की श्रद्धा तोड़ने में विफल होने पर षड्यंत्रकारियों ने नया हथकंडा अपनाकर आश्रमवासियों और साधकों को आपस में लड़ाने के लिए फूट डालने की गंदी चाल चली है। इस चाल से सावधान रहने के लिए पूज्य बापूजी ने संदेश दिया कि ''कुछ लोग बहकावे में डाल रहे हैं कि 'आश्रमवासी बापू को अंदर ही रखना चाहते हैं।' यह बदमाशों की बात है। आश्रमवासियों के प्रति बगावत 'डिवाइड एंड रूल' वालों की चालबाजी है। आश्रमवासियों के प्रति ऐसे गंदे प्रचार से बचें। मेरी तबीयत की चिंता नहीं करो, मेरा शरीर अभी लाचार हो रहा है लेकिन मैं लाचार नहीं हूँ। आप भी लाचार नहीं होना।''

दहेज एक्ट में जाँच के बाद ही हो गिरफ्तारी - सर्वोच्च न्यायालय

सर्वोच्च न्यायालय ने दहेज कानून के दुरुपयोग पर चिंता जताते हुए और झूठे केसों की बढ़ती संख्या को देखते हुए पुलिस को हिदायत दी है कि 'दहेज उत्पीड़न के केस में आरोपी की गिरफ्तारी सिर्फ जरूरी होने पर ही हो।'

इस आदेश के बाद अब दहेज केस में किसीको गिरफ्तार करने के लिए पुलिस को पहले केस डायरी में वजह दर्ज करनी होगी, जिसकी मजिस्ट्रेट समीक्षा करेगा । सर्वोच्च न्यायालय ने दहेज केस में पुलिस अधिकारी के पास तुरंत गिरफ्तारी की शक्ति को भ्रष्टाचार का बड़ा स्रोत माना है।

सर्वोच्च न्यायालय के फैसले में क्या लिखा है ?

सर्वोच्च न्यायालय की दो सदस्यीय खंडपीठ ने राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो का हवाला देते हुए लिखा है कि 'अनुच्छेद ४९८ए के तहत २०१२ में करीब २ लाख लोगों की गिरफ्तारी हुई, उनमें से लगभग एक चौथाई महिलाएँ थीं । अनुच्छेद ४९८ए के मामलों में चार्जशीट की दर ९३.६% है जबकि सजा की दर १५% है, जो काफी कम है । फिलहाल ३,७२,७०६ केसों की सुनवाई चल रही है, जिनमें लगभग ३,१७,००० मुकदमों में आरोपियों की रिहाई की सम्भावना है । इन आँकड़ों को देखते हुए लगता है कि इस कानून का इस्तेमाल पति और उनके रिश्तेदारों को परेशान करने के लिए हथियार के तौर पर किया जा रहा है।'

दहेज उत्पीड़न के बढ़ते झूठे केसों पर सर्वोच्च न्यायालय ने जो कहा है, वह चेतावनी लोकहितैषी पूज्य बापूजी ने अपने सत्संगों में कई वर्षों पहले ही दे दी थी । इस कानून के दुरुपयोग से समाज को आगाह करने हेतु 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के फरवरी २०१३ के अंक में 'निर्दोषों पर अत्याचार, ४९८ए के उपयोग में अंधाधुंधी' शीर्षक से लेख भी छपा था । इसका सुपरिणाम यह हुआ कि देश में जागरूकता आयी।

इसी प्रकार दिल्ली गैंग रेप के बाद जब बलात्कार के लिए भी कड़क कानून बनाने की बात उठ रही थी, तब भी पूज्यश्री ने जाहिर सत्संग में कहा था : "अभी स्त्री-सुरक्षा के लिए कड़क कानून बनाने जा रहे हैं तो (इस बात को ध्यान में रखा जाय कि) पहले जो कड़क कानून बने हैं, उनसे भी घाटा ही हुआ है। जैसे महिलाएँ दहेज के लिए सतायी जाती थीं तो अब दहेज माँगने पर ससुर, सासु या पति को जेल भेज दिया जाता है। अब सच्चे केस तो ५-१०% होते हैं, झूठे केस ९०-९५% होते हैं। ऐसे ही कड़क कानून बनेंगे तो पुरुषों के लिए अत्याचारवाले झूठे केस ज्यादा बनेंगे। किसी महिला ने किसीको फँसाना चाहा या किसी प्रतिद्वन्द्वी ने किसी बाई को पैसे दे के मुकदमा कराया तब भी माइयों को ज्यादा नुकसान होगा क्योंकि किसी पर झूठा केस हुआ और वह पकड़ा गया तो उसकी माँ रोयेगी, कई रिश्तेदार महिलाएँ दुःखी होंगी, पत्नी रोयेगी, बहन रोयेगी तो माइयों को घाटा हुआ तथा भाइयों को भी घाटा हुआ। इसलिए मेरा सत्संग जो उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश सुन रहे हों, वे सज्जन लोग हैं, उनसे मैं यह अपील करता हूँ कि किसी भी पुरुष के साथ २-४ माइयाँ जुड़ी हैं - बहन, भाभी, माँ, पत्नी... कोई-न-कोई जुड़ी हैं। अतः कोई ऐसा कानून न बने, जिससे झूठे केसों में बेचारे पुरुष घसीटे जायें, नहीं तो उसमें माइयाँ भी तो दुःखी होंगी।"

दहेज-उत्पीड़न कानून के हो रहे दुरुपयोग तथा यौन-उत्पीड़न कानून के भविष्य में होनेवाले दुरुपयोग के बारे में पूज्यश्री ने काफी पहले ही समाज एवं सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को सचेत किया था।

जब बापूजी ने उक्त वचन कहे थे तो मीडिया ने पूज्यश्री की दूरदर्शिता का लाभ समाज को दिलाने के बजाय उसे गलत ढंग से पेश कर बड़े ही जोर-शोर से महीनों तक कुप्रचार किया था लेकिन आज वही मीडिया इन कानूनों के दुरुपयोग की खबरें उजागर कर उस तथ्य को स्वीकार कर रहा है और न्यायालय ने तो दहेज विरोधी कानून का दुरुपयोग रोकने के लिए कदम भी उठाये हैं । अब जब यौन-उत्पीड़न कानून का भी बड़ी मात्रा में दुरुपयोग उजागर हो चुका है तो उस पर रोक कब लगेगी इसका सभीको इंतजार है । 'को-ऑर्डिनेशन काउंसिल ऑफ ऑल बार एसोसिएशन' के चेयरमैन, अधिवक्ता श्री राजीव जय के अनुसार दुष्कर्म के कानूनों (पॉक्सो अधिनियम आदि) का दुरुपयोग खुद युवतियाँ भी कर रही हैं और नाबालिग युवतियों के परिजन भी । यह पाया गया है कि कई नाबालिग लड़कियाँ अपने परिजनों के दबाव व कहने पर दुष्कर्म एवं अपहरण का मामला बना देती हैं ।

दुर्भाग्यवश ऐसे कानून का दुरुपयोग आज पूज्य बापूजी पर ही हो रहा है और रेप के संशोधित कानूनों के लिए तो कई वरिष्ठ वकीलों ने भी कहा कि 'यह कानून अस्पष्ट है ।' वि.हि.प. (पंजाब) के प्रवक्ता श्री विजयसिंह भारद्वाज के मत में यह पॉक्सो कानून राष्ट्र-जागृति लानेवाले, हमेशा अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाले संत पूज्य बापूजी को जेल भेजने के लिए ही बनाया गया था । इसी कारण निर्दोष होते हुए भी बापूजी को जमानत नहीं मिल रही है ।

सर्वोच्च न्यायालय के प्रसिद्ध पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्रीकृष्णा का कहना है कि ''नये बलात्कार विरोधी कानूनों में कुछ ऐसे संशोधन हैं जो कि जरूरत से ज्यादा कठोर, बेरहम हैं ।''

यह कानून महामारी का रूप ले और हमारा सामाजिक ढाँचा टूटे उससे पहले उम्मीद है कि लोगों में जागरूकता आयेगी, देश में एक बहस छिड़ेगी तथा माननीय सर्वोच्च न्यायालय यौन-शोषण कानून व पॉक्सो एक्ट के हो रहे दुरुपयोग को रोकने हेतु भी ठोस कदम उठायेगा । - श्री धर्मेन्द्र गुप्ता

महिला-सुरक्षा कानून बन रहा महिलाओं के लिए घातक

- प्रतिवर्ष करीब ५०,००० महिलाओं को जेल, जिनमें अधिकतम निर्दोष
- झूठे मुकदमे के भय से महिलाओं, विशेषकर युवतियों को किया जा रहा नौकरी आदि से वंचित
- पारिवारिक व्यवस्था को तहस-नहस करने के लिए महिलाओं को बनाया जा रहा मोहरा

जोधपुर व अहमदाबाद केस की अदालती गतिविधियाँ

(२३ जुलाई तक की जानकारी)

(१) जोधपुर केस में आरोप लगानेवाली लड़की की उम्र के संबंध में उपलब्ध नये दस्तावेजों को मँगवाने की याचिका एवं पॉक्सो एक्ट के अंतर्गत लड़की के आयु-निर्धारण के संबंध में याचिका - आश्रम-पक्ष द्वारा दाखिल इन २ याचिकाओं की सुनवाई ३ जुलाई को सर्वोच्च न्यायालय में हुई । इस संदर्भ में न्यायालय ने राजस्थान सरकार को नोटिस देकर जवाब माँगा है । सर्वोच्च न्यायालय में बापूजी की जोधपुर केस में जमानत याचिका की सुनवाई हेतु अगली तारीख १९ अगस्त है ।

(२) अहमदाबाद केस में गुजरात उच्च न्यायालय में बापूजी की जमानत याचिका की सुनवाई २१ अगस्त को है ।

सभी साधक हृदयपूर्वक रोज प्रार्थना करें कि उपरोक्त सुनवाई में पूज्य बापूजी को जमानत मिल जाय । सभी साधक, भक्त 'ॐ ॐ ॐ बापूजी जल्दी बाहर आयें !' का संकल्प व इसका अधिक-से-अधिक जप करें ।

बलात्कार निरोधक कड़े कानूनों का अंधाधुंध दुरुपयोग शुरू होने से निर्दोष पुरुषों के साथ अत्याचार हो रहा है

बलात्कार निरोधक कानून का हो रहा है दुरुपयोग

२०१३ में बलात्कार के मामलों में जेलों में डाले गये ७६% लोग बेकसूर साबित होकर रिहा हुए

कानून हमारे अधिकारों की सुरक्षा के लिए बनाये जाते हैं लेकिन आजकल इनके दुरुपयोग के मामले ज्यादा सामने आने लगे हैं। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने भी माना कि दहेज-विरोधी कानून का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है (पढ़ें पृष्ठ ६)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा कि रेप को लेकर बने सख्त कानूनों का महिलाओं द्वारा दुरुपयोग करने के मामले सामने आये हैं। इस बारे में न्यायाधीश श्री कैलाश गम्भीर ने कहा : ''यह साफ तौर पर कानून के साथ खिलवाड़ करना है।'' न्यायाधीशों की पीठ ने कहा : ''अदालत को इस बात के लिए सजग रहना चाहिए कि कहीं रेप का मामला फर्जी तो नहीं है।''

दिल्ली उच्च न्यायालय में हाल ही के समय में दुष्कर्म के १३ मामलों में दर्ज एफआईआर रद्द करने के लिए याचिका दायर की गयी। इनमें कहा गया कि शिकायतकर्ता ने लड़के के द्वारा शादी से इनकार के बाद मुकदमा दर्ज कराया था और अब उनकी शादी हो चुकी है, इसलिए मुकदमा खारिज किया जाय। इससे सिद्ध हो जाता है कि शादी के लिए वर पक्ष पर दबाव बनाने हेतु भी इन कानूनों का दुरुपयोग हो रहा है।

७ साल जेल में सजा काटने के बाद रिहाई

दिल्ली के एक व्यक्ति इब्राहिम पर उसकी ही बेटी ने दुष्कर्म कर गर्भवती करने का आरोप लगाया था। इससे उसे जेल हो गयी। ७ साल सजा काटने के बाद सिद्ध हुआ कि उसकी बेटी द्वारा लगाये गये आरोप झूठे थे। अदालत ने इब्राहिम को रिहा कर दिया, मगर तब तक उसकी पूरी दुनिया तबाह हो चुकी थी।

पुरुषों के साथ महिलाएँ भी चपेट में

बलात्कार निरोधक कड़े कानूनों का अंधाधुंध दुरुपयोग शुरू होने से निर्दोष पुरुषों के साथ अत्याचार हो रहा है, उनकी मान-प्रतिष्ठा को खूब नुकसान पहुँच रहा है। साथ ही उनसे जुड़ी कई महिलाएँ भी अत्याचार की चपेट में आ जाती हैं। इससे महिलाओं की सुरक्षा के लिए बना कानून महिलाओं को ही भारी पड़ रहा है। इसके कई उदाहरण सामने आये हैं। हाल ही में मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिले के परेठा गाँव के ३८ वर्षीय शिक्षक पर गाँव की एक महिला ने बलात्कार का झूठा मामला दर्ज करवाया था। इससे शिक्षक का सारा परिवार तबाह हो गया। अखबारों में 'बलात्कारी जनशिक्षक' शीर्षक से खूब खबरें छपीं और गाँववालों ने ही नहीं, उनके अपनों ने भी उनसे मुँह मोड़ लिया। इस मामले में लड़की के मेडिकल के साथ शिक्षक का डीएनए जाँच हुआ। मेडिकल रिपोर्ट सामान्य आयी। डीएनए

से भी साबित हो गया कि उस पर लगा आरोप झूठा है।

ऐसे ही इंदौर के ५० वर्षीय रूपकिशोर अग्रवाल पर उनकी किरायेदार ३३ वर्षीया महिला ने बलात्कार का मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने अग्रवाल का पक्ष जाने बगैर ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया। वे ढाई महीने तक जेल में रहे। इससे वे अवसाद (डिप्रेशन) के शिकार हो गये। उसके बाद जमानत तो मिली लेकिन वे टूट चुके थे। इस बीच न्यायालय में सुनवाई के दौरान महिला ने माना कि उसके साथ बलात्कार नहीं हुआ है बल्कि अग्रवाल और उसके बीच पैसों की लेन-देन का विवाद है। न्यायालय ने महिला के खिलाफ मुकदमा चलाने का आदेश दिया। अदालत से मिली क्लीन चिट भी अग्रवाल को सदमे से बाहर नहीं निकाल पायी और उन्होंने आत्महत्या कर ली। आत्महत्या करने से पहले लिखे पत्र में उन्होंने अपनी मौत का जिम्मेदार उस महिला को ठहराया।

अग्रवाल की २१ वर्षीया बेटी कहती है : ''महिलाओं की रक्षा के लिए बने कानूनों का किस कदर दुरुपयोग हो सकता है, यह घटना उसकी मिसाल है। महिलाओं के मामलों में पुलिस अंधाधुंधी करके सच्चाई को अनदेखा कर रही है। फास्ट ट्रैक कोर्ट में मची जल्दबाजी भी निर्दोषों के लिए घातक साबित हो सकती है।''

खंडवा (म.प्र.) के पुलिस अधीक्षक भी ऐसी ही एक घटना बताते हैं : ''एक महिला ने दो लोगों के खिलाफ बलात्कार की शिकायत दर्ज करवायी थी। दोनों आरोपियों को तुरंत जेल भेज दिया गया। अदालत में चालान पेश करते ही आदिम जाति कल्याण विभाग से महिला को ५०,००० रुपये की आर्थिक सहायता भी स्वीकृत हो गयी। इसी बीच महिला अपने बयान से मुकर गयी और कहने लगी कि उसके साथ दुष्कर्म नहीं हुआ है।''

पिछले एक साल में ऐसे मामलों की बाढ़ आ गयी है। यह कानून तो समाज व देश को तोड़ने का मोहरा बन गया है। आज महिला वर्ग को कोई भी नौकरी तथा मकान मालिक कमरा किराये पर देने से कतरा रहा है। भारतीय संस्कृति के सामाजिक ढाँचे को तोड़ने का देशद्रोहियों का एक गहरा षड्यंत्र है। आज कितने ही लोग हैं जो दुष्कर्म व छेड़छाड़ के झूठे मुकदमों का खामियाजा भुगत रहे हैं।

इसी प्रकार गहरा षड्यंत्र करके विश्व-कल्याण में रत लोकसंत पूज्य बापूजी पर झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगाकर उन्हें पिछले ११ महीनों से जेल में रखा गया है। आरोप लगानेवाली लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट व जाँच करनेवाली डॉ. शैलजा वर्मा के बयान से भी सिद्ध होता है कि बलात्कार नहीं हुआ है, खरोंच तक नहीं आयी है। जितने भी तथ्य हैं उन्हें देखने-सुनने से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह केस पूरी तरह बोगस है। यह बात श्री सुब्रमण्यम स्वामी तथा श्री राम जेठमलानी जैसे वरिष्ठ न्यायविदों ने भी कही है।

कानून का दुरुपयोग करनेवालों के खिलाफ शुरू हुई मुहिम

महिला सुरक्षा एवं उत्पीड़न के कानूनों का दुरुपयोग करनेवालों के खिलाफ कुछ गैर-सरकारी संस्थाओं ने मुहिम शुरू की है। इनके द्वारा ऐसे लोगों को बेनकाब किया जायेगा, जो कानून का दुरुपयोग कर रहे हैं। इनकी यह भी माँग है कि कानून का गलत इस्तेमाल करनेवाले लोगों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। - श्री रवीश राय

दीपक चौरसिया के खिलाफ एफआईआर दर्ज

लोगों की श्रद्धा तोड़ने के लिए पिछले लगातार ११ महीनों से पूज्य बापूजी के खिलाफ अपमानजनक, नकली विडियो फुटेज दिखा के, वाक्यों को तोड़-मरोड़कर, अश्लील व बेबुनियाद कहानियाँ बना-बना के 'इंडिया न्यूज' चैनल ने संविधान एवं प्रसारण मंत्रालय के दिशा-निर्देशों की धज्जियाँ उड़ा के रखी हैं। इससे करोड़ों श्रद्धालु एवं धर्मप्रेमी बेहद आहत और व्यथित हैं। देश के विभिन्न राज्यों के अनेक स्थानों पर लोगों ने दीपक चौरसिया व इंडिया न्यूज के खिलाफ न्यायिक दंडाधिकारी के समक्ष ७० शिकायतें की हैं। सैकड़ों स्थानों पर इन लोगों के खिलाफ जागरूक जनता ने शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन किये एवं रैलियाँ निकाली हैं। हाल ही में 'इंडिया न्यूज' के अधिकारियों, दीपक चौरसिया आदि के खिलाफ सीतामढ़ी (बिहार) में भा.दं.वि. की धारा ११४, १५३, १९३, २९५(ए), २९८, ५०५(१)(सी)आर/डब्ल्यू, १२०(बी) तथा आईटी एक्ट ६६(ए) के अंतर्गत एफआईआर दर्ज हुई हैं। साथ ही दार्जिलिंग (प.बं.) में भी इनके खिलाफ भा.दं.वि. की धारा १५३(ए) एवं २९५(ए) के अंतर्गत एफआईआर दर्ज हुई है। - श्री आर.एन. ठाकुर

ऋषि प्रसाद सम्मेलन

गुरुपूर्णिमा के अगले दिन १३ जुलाई को देशभर में 'ऋषि प्रसाद जयंती' मनायी गयी । इसी उपलक्ष्य में अहमदाबाद आश्रम में संत-सम्मेलन हुआ । ऋषि प्रसाद का वितरण करनेवाले सभी पुण्यात्माओं ने कुप्रचार को सुप्रचार में बदलने के लिए घर-घर 'ऋषि प्रसाद' पहुँचाने का संकल्प लिया ।

'ऋषि प्रसाद स्मृतिचिह्न' योजना

इसके अंतर्गत गुरुपूर्णिमा तक 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के १०० सदस्य या 'ऋषि दर्शन' विडियो मैगजीन के १० सदस्य बनानेवाले १५० साधकों को गुरुपूर्णिमा पर्व पर 'ऋषि प्रसाद स्मृतिचिह्न' प्रदान किये गये ।

सभी साधकों के लिए खुशखबरी है कि अब यह योजना उत्तरायण २०१५ तक बढ़ा दी गयी है । इस दैवी कार्य में आप भी जुड़ के लाभान्वित हो सकते हैं । इससे आपकी आनेवाली पीढ़ियाँ भी आपकी गुरुसेवा, संस्कृति-सेवा याद करेंगी और प्रेरणा पायेंगी ।

ऋषि प्रसाद जयंती पर हुए भव्य संत-सम्मेलन में उपस्थित विभिन्न मठों व संस्थाओं के संतों ने बापूजी के ऊपर चल रहे षड्यंत्र का पुरजोर विरोध किया तथा 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सराहना की और अपना अनुभव बताया । श्री राजेन्द्र शास्त्रीजी ने तो स्वयं 'ऋषि प्रसाद' के १०० सदस्य बनाने का संकल्प भी लिया ।

गुरुपूर्णिमा पर इंटरनेट पर छाये रहे बापू

– रुही गुप्ता, ई.एन.आई. न्यूज

गुरुपूनम के निमित्त संत आशारामजी बापू के अनुयायी सोशल नेटवर्किंग साइट ट्विटर पर उमड़ पड़े व #MyGuruPurnimaWithAsaramBapuJi विषय टॉप ट्रेंड (सर्वाधिक चर्चा) में रहा ।

'सबमें एक परब्रह्म परमात्मा' की सीख देनेवाले ७४ वर्षीय बापूजी के बड़ी संख्या में समर्थक हैं और तमाम प्रकार के कथित आरोप लगने के बावजूद भी उनकी संख्या में कोई कमी नहीं आयी है ।

ब्रह्मचर्यासन

साधारणतया योगासन भोजन के बाद नहीं किये जाते परंतु कुछ ऐसे आसन हैं जो भोजन के बाद भी किये जाते हैं। उन्हीं आसनों में से एक है ब्रह्मचर्यासन। यह आसन रात्रि-भोजन के बाद सोने से पहले करने से विशेष लाभ होता है।

इसके नियमित अभ्यास से ब्रह्मचर्य-पालन में खूब सहायता मिलती है अर्थात् इसके अभ्यास से अखंड ब्रह्मचर्य की सिद्धि होती है। इसलिए योगियों ने इसका नाम 'ब्रह्मचर्यासन' रखा है।

लाभ : इस आसन के अभ्यास से वीर्यवाहिनी नाड़ी का प्रवाह शीघ्र ही ऊर्ध्वगामी हो जाता है और सिवनी नाड़ी की उष्णता कम हो जाती है, जिससे यह आसन स्वप्नदोषादि बीमारियों को दूर करने में परम लाभकारी सिद्ध हुआ है।

जिन व्यक्तियों को बार-बार स्वप्नदोष होता है, उन्हें सोने से पहले ५ से १० मिनट तक इस आसन का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। इससे उपस्थ इन्द्रिय में काफी शक्ति आती है और एकाग्रता में भी वृद्धि होती है।

विधि : जमीन पर घुटनों के बल अर्थात् वज्रासन में बैठ जायें। फिर दोनों पैरों को बाहर की ओर इस तरह फैला दें कि नितम्ब और गुदा का भाग जमीन से लगा रहे। हाथों को घुटनों पर रख के शांत चित्त से बैठे रहें।

(पृष्ठ १५ से 'ऋषि पंचमी...' का शेष) वसिष्ठ इन सप्तर्षियों को प्रणाम करके प्रार्थना करें कि 'हे सप्तर्षियो ! हमसे कायिक, वाचिक व मानसिक जो भी भूलें हो गयी हैं, उन्हें क्षमा करना। आज के बाद हमारा जीवन ईश्वर के मार्ग पर शीघ्रता से आगे बढ़े, ऐसी कृपा करना।' फिर अपने गुरु का पूजन करें। तुम्हारी अहंता, ममता ऋषिचरणों में अर्पित हो जाय, यही इस व्रत का ध्येय है।

इस दिन हल से जुते हुए खेत का अन्न नहीं खाना चाहिए, खैर अब तो ट्रैक्टर हैं; मिर्च-मसाले, नमक, घी, तेल, गुड़ वगैरह का सेवन भी त्याज्य है। दिन में केवल एक बार भोजन करें। इस दिन लाल वस्त्र दान करने का विधान है।

ब्रह्मज्ञानरूपी फल की प्राप्ति

हमारी क्रियाओं में जब ब्रह्मसत्ता आती है, हमारे रजोगुणी कार्य में ब्रह्मचिंतन आता है, तब हमारा व्यवहार भी तेजस्वी, देदीप्यमान हो उठता है। खान-पान-स्नानादि तो हररोज करते हैं पर व्रत के निमित्त उन ब्रह्मर्षियों को याद करके सब क्रिया करें तो हमारी लौकिक चेष्टाओं में भी उन ब्रह्मर्षियों का ज्ञान छलकने लगेगा। उनके अनुभव को अपना अनुभव बनाने की ओर कदम आगे रखें तो ब्रह्मज्ञानरूपी अति अद्भुत फल की प्राप्ति में सहायता होती है।

ऋषि पंचमी का यह व्रत हमें ऋषिऋण से मुक्त होने के अवसर की याद दिलाता है। लौकिक दृष्टि से तो यह अपराध के लिए क्षमा माँगने का और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर है पर सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो यह अपने जीवन को ब्रह्मपरायण बनाने का संदेश देता है।
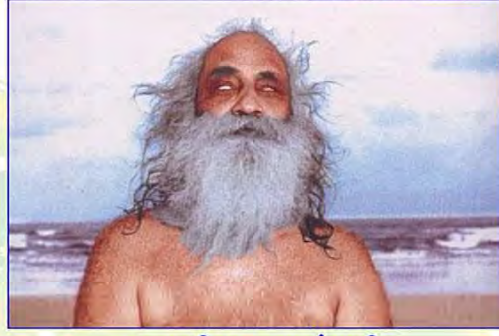
स्वामी शरणानंदजी

योगः कर्मसु कौशलम्

एक सम्पन्न घराने के इकलौते बालक को पढ़ने का शौक तो था ही, साथ ही लालटेन की रोशनी में चलने का भी बड़ा शौक था। पढ़ने के लिए वह दूसरे गाँव में जाता था। छुट्टी होने के बाद जानबूझकर खेल-कूद में समय बिताता। जब थोड़ा अँधेरा हो जाता तो लालटेन जलाकर घर वापस लौटता था।

एक दिन घर पहुँचने पर उसे पता चला कि लालटेन की ढिबरी (केरोसीन की टंकी का ढक्कन) रास्ते में कहीं गिर गयी है। दूसरे दिन रविवार था। बालक को बेचैनी होने लगी कि 'आखिर मुझसे ऐसी भूल हुई कैसे ? मैं छोटी-सी ढिबरी को भी सँभाल नहीं पाया !'

बाह्य दृष्टि से देखें तो उसके जैसे सम्पन्न परिवार के बालक के लिए लालटेन की ढिबरी खो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। एक लालटेन बिना ढिबरी की हो गयी तो उसके पिता उसे ढिबरी तो क्या दूसरी नयी लालटेन ही खरीदकर दे सकते थे किंतु बालक के मन में अपनी कार्यकुशलता में कमी का बड़ा भारी दुःख था।

अगला सारा दिन, सारी रात बेचैनी में बीती। सोमवार आया। बालक घर के दरवाजे से ही जमीन पर आँखें गड़ा-गड़ाकर ढिबरी खोजते हुए पाठशाला के रास्ते निकल पड़ा। छोटी-सी चीज थी, दो दिन बीत गये थे। रास्ते में पड़ी चीज किसीको दिख गयी हो तो उसने उठा भी ली हो, यह भी हो सकता था। इस प्रकार ढिबरी के मिलने की सम्भावना तो बहुत कम थी परंतु बालक के मन में अपने से प्रमाद हो जाने की पीड़ा तथा अपनी उस छोटी-से-छोटी अकार्यकुशलता को मिटाने का चाव बड़ा प्रबल था। चलते-चलते विद्यालय पहुँचने से पहले ढिबरी मिल गयी। बालक को बड़ी प्रसन्नता हुई। आगे चलकर यही बालक 'स्वामी शरणानंदजी' के नाम से सुविख्यात हुआ।

सत्य ही है कि यदि किसीको एक गिलास पानी ठीक से पिलाना नहीं आता है तो ध्यान करना भी नहीं आयेगा। छोटे-से-छोटा काम करने में जो असावधानी करता है वह करने की आसक्ति से मुक्त नहीं हो सकता। और आसक्तिरहित हुए बिना योगवित् होना सम्भव नहीं है। 'गीता' में भगवान कहते हैं :

योगः कर्मसु कौशलम्।

पूज्य बापूजी भी यही समझाते हैं कि "जो भी कार्य करें, उसे पूरे मनोयोग से, दिल लगाकर करें। किसी भी काम को आलस्य या लापरवाही से बिगड़ने न दें। जो कर्म को पूरे मनोयोग से करता है उसका आत्मविकास होता है, उसकी योग्यताओं का विकास होता है। उठो... जागो... दूर करो लापरवाही को और तत्परता एवं कुशलतापूर्वक छलाँग मारो। फिर तो पाओगे कि सफलता तुम्हारा ही इंतजार कर रही है।"

आश्रम के सत्साहित्य 'पुरुषार्थ परम देव, जीवन रसायन, निर्भय नाद' आदि का प्रतिदिन अमृतपान करने व उनमें लिखे वचनों पर अमल करने से सजगता, कार्यकुशलता, हिम्मत, साहस और ईश्वर व महापुरुषों की असीम कृपा के भंडार स्वतः ही खुल जाते हैं।

ऋषिऋण से मुक्त एवं ब्रह्मपरायण होने का अवसर : ऋषि पंचमी

(ऋषि पंचमी : ३० अगस्त)

भारत ऋषि-मुनियों का देश है । इस देश में ऋषियों की जीवन-प्रणाली का और ऋषियों के ज्ञान का अभी भी इतना प्रभाव है कि उनके ज्ञान के अनुसार जीवन जीनेवाले लोग शुद्ध, सात्त्विक, पवित्र व्यवहार में भी सफल हो जाते हैं और परमार्थ में भी पूर्ण हो जाते हैं।

ऋषि तो ऐसे कई हो गये जिन्होंने अपना जीवन केवल 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' बिताया । हम उन ऋषियों का आदर-पूजन करते हैं । उनमें से भी वसिष्ठ, विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, अत्रि, गौतम और कश्यप - इन सप्तऋषियों का स्मरण पातक का नाश करनेवाला, पुण्य अर्जन करानेवाला, हिम्मत देनेवाला है।

कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः ।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः ॥

ज्ञान प्राप्त करने के लिए जिन महापुरुषों ने एकांत अरण्य में निवास करके अपने प्रियतम परमात्मा में विश्रांति पायी, ऐसे ऋषियों, आर्षद्रष्टाओं को हमारे प्रणाम हैं।

ऋषि पंचमी के दिन ऋषियों का पूजन किया जाता है । इस दिन महिलाएँ विशेष रूप से व्रत रखती हैं । जिसने भी अपने-आपको (आत्मस्वरूप को) नहीं जाना है, यह पर्व उन सबके लिए है । जिस अज्ञान के कारण यह जीव कितनी ही माताओं के गर्भ में लटकता आया है, कितनी ही यातनाएँ सहता आया है उस अज्ञान को निवृत्त करने के लिए उन ऋषि-मुनियों को हम हृदयपूर्वक प्रणाम करते हैं, उनका पूजन करते हैं। ऋषि-मुनियों का वास्तविक पूजन है उनकी आज्ञा शिरोधार्य करना । वे तो चाहते हैं :

देवो भूत्वा देवं यजेत् ।

देवता होकर देवता की पूजा करो । ऋषि असंग, द्रष्टा, साक्षी स्वभाव में स्थित होते हैं । वे जगत के सुख-दुःख, लाभ-हानि, मान-अपमान, शुभ-अशुभ में अपने द्रष्टाभाव से विचलित नहीं होते । वेदांत को सुन-समझकर असली 'मैं' में, जाग्रत-विभू-व्यापक परमात्मस्वरूप में जाग जाना ही उनके आदर-पूजन का परम फल है ।

मम दरसन फल परम अनूपा ।
जीव पाव निज सहज सरूपा ॥

(श्री रामचरित. अर. कांड : ३५.५)

जीव अपने सहज सच्चिदानंदस्वरूप को पा ले । फिर न सुख सच्चा न दुःख सच्चा, न जन्म सच्चा न मृत्यु - सब सपना, चैतन्य, साक्षी, सच्चिदानंद अपना । ऋषियों ने हमारे सामाजिक व्यवहार में, त्यौहारों

में, रीति-रिवाजों में कुछ-न-कुछ ऐसे संस्कार डाल दिये कि अनंत काल से चली आ रही मान्यताओं के पर्दे हटें और सृष्टि को ज्यों-का-त्यों देखते हुए सृष्टिकर्ता परमात्मा को पाया जा सके । ऋषियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उनका पूजन करना चाहिए, ऋषिऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करना चाहिए । योगवासिष्ठ, गीता, भागवत, ब्रह्मज्ञानी गुरुओं का सत्संग - सब ऋषि वाणी हैं । ब्रह्मज्ञानी संतों का सत्संग पाना एवं दूसरों तक पहुँचाना ऋषिऋण से मुक्त होने का सुंदर व सर्वहितकारी साधन है । धनभागी हैं 'ऋषि प्रसाद' पढ़ने व 'ऋषि दर्शन' देखनेवाले ! धनभागी हैं इस दैवी कार्य में सहभागी होने की प्रेरणा देनेवाले एवं समाज तक सत्संग-संदेश पहुँचानेवाले !

ऋषि पंचमी के दिन माताएँ आमतौर पर व्रत रखती हैं । जिस किसी महिला ने मासिक धर्म के दिनों में शास्त्र-नियमों का पालन नहीं किया हो या अनजाने में ऋषि का दर्शन कर लिया हो या इन दिनों में उनके आगे चली गयी हो तो उस गलती के कारण जो दोष लगता है, उस दोष का निवारण करने हेतु यह व्रत रखा जाता है ।

ऋषि-मुनियों को आर्षद्रष्टा कहते हैं । उन्होंने कितना अध्ययन करने के बाद सब बातें बतायी हैं ! ऐसे ही नहीं कह दिया है ।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मासिक स्राव के दिनों में स्त्री के जो परमाणु (वायब्रेशन) होते हैं, वे अशुद्ध होते हैं । उसके मन-प्राण विशेषकर नीचे के केन्द्रों में होते हैं । इसलिए उन दिनों के लिए शास्त्रों में जो व्यवहार्य नियम बताये गये हैं, उनका पालन करने से हमारी उन्नति होती है ।

मेरे गुरुदेव (साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) स्त्री के उत्थान में तो विश्वास रखते थे लेकिन आजकल के जैसे उत्थान में नहीं । स्त्री का वास्तविक उत्थान क्या है, यह तो ऋषियों की दृष्टि से जो देखें वे ही समझ सकते हैं । मदालसा रानी, जीजाबाई, चुड़ाला रानी, दीर्घतपा ऋषि की पत्नी जैसी आदर्श चरित्रवाली स्त्रियाँ हो गयीं । गार्गी और सुलभा जैसी स्त्रियाँ भरी सभा में शास्त्रार्थ करती थीं । कई स्त्रियों ने भी ऋषिपद पाया है, उपनिषदों में उनका वर्णन आता है ।

जिन घरों में शास्त्रोक्त नियमों का पालन होता है, लोग कुछ संयम से जीते हैं, उन घरों में तेजस्वी संतानें पैदा होती हैं ।

व्रत-विधि

यह दिन त्यौहार का नहीं, व्रत का है । हो सके तो इस दिन अपामार्ग (लटजीरा) की दातुन करें । शरीर पर देशी गाय के गोबर का लेप करके नदी में १०८ गोते मारने का विधान भी है । ऐसा न कर सको तो घर में ही १०८ बार 'हरि' का नाम लेकर स्नान कर लो । फिर मिट्टी या ताँबे के कलश की स्थापना करके उसके पास अष्टदल कमल बनाकर उन दलों में सप्तर्षियों व वसिष्ठपत्नी अरुंधती का आवाहन कर विधिपूर्वक उनका पूजन-अर्चन करें । फिर कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि व (शेष पृष्ठ १२ पर)

आपकी आजादी आपके हाथ में

- पूज्य बापूजी

(राष्ट्रभाषा दिवस : १४ सितम्बर)

अंग्रेजों ने आकर हमारे मन को, श्रद्धा को, दिल-दिमाग को हमारी मंत्रविद्या, वैदिक विद्या और भारतीय संस्कृति से हटाकर अपनी तरफ आकर्षित कर दिया। अब जरा-जरा बात में हम अंग्रेजी के दास हो गये। लोग बोलते हैं कि अंग्रेजी भाषा बहुत बढ़िया है। अरे ! अपनी भाषा में तुम काकी को काकी, मौसी को मौसी और बुआ को बुआ बोलते हो लेकिन अंग्रेजी भाषा में सभीको 'आंटी', दूसरी कोई व्यवस्था ही नहीं है। हमारे पास मामा को मामा, काका को काका और मौसा को मौसा बोलने की व्यवस्था है लेकिन अंग्रेजी में सभीको 'अंकल' बोलते हैं। सामाजिक व्यवस्था ही नहीं है उसमें कोई, शब्दकोष ही नहीं है इतना।

अंग्रेजों के शासन के कारण और मैकाले की शोषक और गुलाम बनानेवाली शिक्षा-पद्धति के कारण हम हिन्दुस्तानी होते हुए भी हमारा दिल-दिमाग गुलामी से भरा हुआ है। गुलामी की जंजीरों को तोड़ो ! जापानियों को मैं बहुत प्यार करता हूँ। वे जापानी अमेरिकन अंग्रेजी जानते हैं फिर भी अमेरिका में जाते हैं तो अपने देश की भाषा बोलते हैं और हमारे हिन्दुस्तान में मैं हवाई जहाजों में देखता हूँ कि बेचारे कितने सारे पढ़े-लिखे लोग अंग्रेजी पूरी जानते भी नहीं फिर भी ठोकम-ठोक करते हैं : 'मिस्टर जैसवाल ! मैंने तुम्हारे लिए *wait* किया था *but I can't: because:* मैंने बहुत कोशिश की लेकिन हम मिल नहीं पाये। *Ok, I will meet you.*' 'आप मुझे याद करना, *do remember me, Ok?*'

अरे ! न सही अंग्रेजी, न सही-शुद्ध हिन्दी, अपनी गुलामी का प्रदर्शन क्यों करते हो ? क्यों अपनी भाषा अशुद्ध करते हो ? संस्कृत भाषा तो देवभाषा है। संस्कृत उच्चारण करो तो मन अंतर्मुख होता है और अंग्रेजी बोलो तो मन बहिर्मुख होता है। बाहर के तोड़-जोड़ से अंग्रेजी बनी है। पढ़े-लिखे तो बेचारे कॉन्वेंट स्कूलों के प्रभाव से, अंग्रेजी के प्रचार के प्रभाव से, गुलामी के प्रभाव से ऐसे हो गये लेकिन अनपढ़ भी मूर्ख हो रहे हैं। हम कहीं जाते हैं न, तो वहाँ के चपरासी बोलते हैं : ''सर ! सर !...'' मैंने कहा : ''सर, सर... क्या बोलता है ! गुरुजी बोल दे, बापूजी बोल दे। सर (सिर) खपानेवाले चले गये, तुम 'सर, सर' क्या करते हो ?''

मैं आपको एक बिल्कुल सच्ची बात बताता हूँ। एक अनपढ़-सा लड़का था, पढ़ा होगा २-५ कक्षा। उसकी बहन की तबीयत खराब थी, पढ़ने में कमजोर थी और बुखार आता था।

मैंने कहा : ''इसको बोल दे रोज सुबह तुलसी के ५ पत्ते चबाकर एक गिलास पानी पिये तो यादशक्ति बढ़ेगी।''

वह बोला : ''बापूजी ! मॉर्निंग में ?''

भक्ति, समता और सूझबूझ की धनी अहिल्याबाई

(अहिल्याबाई होल्कर पुण्यतिथि : २४ अगस्त)

ऋषि-मुनियों की तपस्या से सिंचित भारतभूमि में ऐसी महान वीरांगनाओं का आविर्भाव होता रहा है जिन्होंने अपनी सूझबूझ, संयमनिष्ठा, भगवद्भक्ति व पराक्रम के द्वारा विपरीत परिस्थितियों में भी बाहरी विकास के साथ आत्मिक-पारमार्थिक विकास भी किया । उन्हींमें से एक थीं मालवा की महारानी अहिल्याबाई होल्कर । सन् १७२५ में महाराष्ट्र के चौंडी गाँव में जन्मी अहिल्याबाई को बचपन से ही माता-पिता से भक्ति व संतसेवा के संस्कार मिले थे । 'सारे ऐश्वर्य होने पर भी जिनके जीवन में परमात्म-शांति नहीं है, उनका जीवन व्यर्थ है ।' सत्संग की यह बात उन्होंने पक्की कर ली थी ।

होल्करों के सरदार राघोबा पेशवा की पत्नी आनंदीबाई को अपनी सुंदरता पर बहुत गर्व था । अहिल्याबाई की फैलती यश-कीर्ति उसे विचलित कर गयी और उसने इसका कारण जानने के लिए दासी को अहिल्याबाई के पास भेजा ।

दासी के लौटने पर आनंदीबाई ने बड़ी उत्सुकता से पूछा : ''क्या वह मुझसे भी अधिक सुंदर है ? कपड़े और गहने कैसे पहनती है ?''

दासी : ''महारानी ! वह आपसे बहुत कम सुंदर है । रंग साँवला और कपड़े भी वह साधारण पहनती है । पर उसके चेहरे पर एक अलौकिक तेज व शांति दिखाई देती है, जो मैंने पहले किसीके चेहरे पर नहीं देखी । उसके मधुर व निष्कपट व्यवहार, संतसेवा व भगवद्भक्ति के आगे सभीका सिर झुक जाता है ।''

कल्पना के विपरीत अहिल्याबाई की कीर्ति की सच्चाई जानकर आनंदीबाई को समझ मिली कि 'नश्वर रूप-लावण्य और गहने-गाँठों से अपने को विशेष मानना बड़ी भारी भूल है ।'

कुछ समय बाद अहिल्याबाई के पति व पुत्र की मृत्यु हो गयी किंतु वे उन विकट परिस्थितियों में भी सत्संग के प्रताप से समता के सिंहासन पर विराजमान रहीं । कोई उत्तराधिकारी नहीं था तो रानी ने स्वयं राज्य की बागडोर सँभाली ।

राघोबा पेशवा तथा राज्य के पुराने अधिकारी चन्द्रचूड़ ने उनका राज्य हड़पने की योजना बनायी । रानी ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा गुप्तरूप से दुश्मनों की सारी योजना का पता लगा लिया । उन्होंने राघोबा को पत्र लिखा : 'राघोबा ! तुमने मुझे अबला समझा है पर मैं क्या हूँ यह तो तुम्हें रणभूमि में ही मालूम पड़ेगा । मैं तुम्हारी मर्दानगी का मुकाबला अपने वीर जाँबाजों से नहीं कराऊँगी क्योंकि तुम्हारे लिए तो हमारी महिला सेना ही काफी है । यदि तुम महिला सेना से हार गये तो लोग तुम पर थू-थू करेंगे और यदि जीत भी गये तो भी महिलाओं से युद्ध लड़ने की वजह से तुम कहीं मुँह दिखाने के लायक नहीं रहोगे । (शेष पृष्ठ २० पर)

ये बड़े खिलाड़ी हैं

- स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती
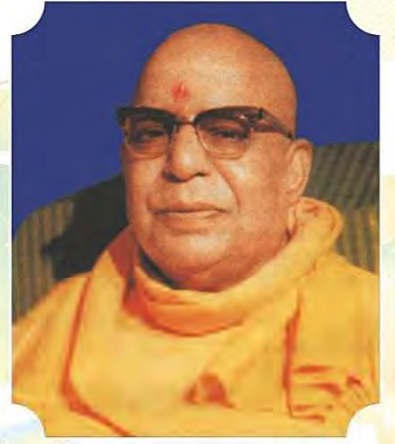
ये जो आत्मदेव हैं, ये बड़े खिलाड़ी हैं। क्या खेल रचा है !

कृष्ण ने कैसी होरी मचाई।
एक ते होरी मचै नहिं कबहुँ,
यातें करौं बहुताई, यह मन में ठहराई ।।

कृष्ण ने विचार किया कि एक से तो होरी (होली) नहीं हो सकती । इसलिए आओ, बहुत की रचना कर दें। अब यह पाँच व पचीस जो कुछ दिख रहे हैं, ये सब उनकी होरी का खेल है।

भाई ! यह क्या तुमने होरी का खेल बता दिया ? बड़ा विलक्षण है यह होरी का खेल।

स एकाकी न रमत् ततो द्वितीयमसृजत् ।

(महोपनिषद् : १.१)

अकेले तो परमात्मा को अच्छा नहीं लगा । तब उन्होंने एक जाग्रत बनाया, एक स्वप्न बनाया, एक सुषुप्ति बनायी, एक विश्व बनाया, एक तेजस बनाया और एक प्राज्ञ बनाया और बनाया नहीं, बन गये। कैसे बन गये ? एक खिलाड़ी जैसे अपने को अनेक रूप में बना दे, ऐसे।

जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ ।
सोइ सोइ भाव दिखावइ आपुन होइ न सोइ ।।

(श्री रामचरित. उ.कां. : ७२-ख)

वही पेड़ बनकर कैसा हरा-भरा, फूल-फलवाला दिखाई पड़ रहा है ! वही कैसा समुद्र बनकर लहरा रहा है ! वही कैसे सूर्य बनकर चमक रहा है ! वही कैसे धरती बनकर सबको अपनी गोद में लिये हुए है ! वही मनुष्य, पशु, पक्षी बनकर सबके रूप में घूम रहा है और वही सबके भीतर अंतःकरण बन के नाना प्रकार का संकल्प-विकल्प, सुख-दुःख भोग रहा है। वही सुषुप्तिकाल बनता है और वही सुषुप्त बनता है। कैसा खिलाड़ी है ! यह सब एक ही देव का विस्तार है महाराज !

मायैषा तस्य देवस्य यया सम्मोहितः स्वयम् ।

(वैतथ्य प्रकरण : १९)

यह उसी देवता की माया है, लीला है, क्रीड़ा है। स्वयं खेल रचकर स्वयं उसमें मोहित हो रहा है। यह अपने आत्मदेव की ही माया है। भाई ! बड़ा खिलाड़ी है। इसलिए इसको 'देव' कहते हैं।

(पृष्ठ १६ से 'आपकी आजादी ...' का शेष) मैंने कहा : ''मॉर्निंग में नहीं, सुबह।''

फिर बोलता है : ''वॉटर के साथ खाना है ?''

मैंने कहा : ''वॉटर नहीं लेना है, नहीं तो फायदा नहीं होगा, पानी लेना है।''

अब अनपढ़ भी अंग्रेजी से कितने प्रभावित हो गये ! जब पढ़े-लिखे नासमझ बन जाते हैं तो अनपढ़ उनका अनुसरण करते हैं।

अपने देश की भाषा की, अपनी संस्कृति की रक्षा आप नहीं करोगे तो क्या आपके दुश्मन करेंगे ? आपको गुलाम बनानेवाले आपको आजाद करेंगे ? नहीं। आपकी आजादी आपके हाथ में है। अतः स्वयं भी मातृभाषा का ही प्रयोग करें और दूसरों को भी प्रेरित करें।

विघ्नविनाशक भगवान श्री गणपतिजी

(गणेश चतुर्थी : २९ अगस्त)

जिस प्रकार अधिकांश वैदिक मंत्रों के आरम्भ में 'ॐ' लगाना आवश्यक माना गया है, वेदपाठ के आरम्भ में 'हरि ॐ' का उच्चारण अनिवार्य माना जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक शुभ अवसर पर श्री गणपतिजी का पूजन अनिवार्य है । उपनयन, विवाह आदि सम्पूर्ण मांगलिक कार्यों के आरम्भ में जो श्री गणपतिजी का पूजन करता है, उसे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है ।

गणेश चतुर्थी के दिन गणेश उपासना का विशेष महत्त्व है । इस दिन गणेशजी की प्रसन्नता के लिए इस 'गणेश गायत्री' मंत्र का जप करना चाहिए :

महाकर्णाय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि,
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।

श्रीगणेशजी का अन्य मंत्र, जो समस्त कामनापूर्ति करनेवाला एवं सर्व सिद्धिप्रद है :

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गणेश्वराय ब्रह्मस्वरूपाय चारवे ।
सर्वसिद्धिप्रदेशाय विघ्नेशाय नमो नमः ॥

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, गणपति खंड : १३.३४)

गणेशजी बुद्धि के देवता हैं । विद्यार्थियों को प्रतिदिन अपना अध्ययन-कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व भगवान गणपति, माँ सरस्वती एवं सद्गुरुदेव का स्मरण करना चाहिए । इससे बुद्धि शुद्ध और निर्मल होती है ।

विघ्न निवारण हेतु

गणेश चतुर्थी के दिन 'ॐ गं गणपतये नमः ।' का जप करने और गुड़मिश्रित जल से गणेशजी को स्नान कराने एवं दूर्वा व सिंदूर की आहुति देने से विघ्नों का निवारण होता है तथा मेधाशक्ति बढ़ती है ।

भूलकर भी न करें...

गणेश चतुर्थी के दिन चाँद का दर्शन करने से कलंक लगता है । इस वर्ष २९ अगस्त को चन्द्रास्त रात्रि ९-१७ बजे है । इस समय तक चन्द्रदर्शन निषिद्ध है ।

भूल से चन्द्रमा (शेष पृष्ठ २० पर)

पुण्यदायी तिथियाँ

२१ अगस्त : अजा एकादशी (सब पापों का नाश करनेवाला व्रत। माहात्म्य पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति)

२५ अगस्त : सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से रात्रि ७-४५ तक) (इस दिन तुलसी की १०८ परिक्रमा करने से दरिद्रता मिटती है।)

२९ अगस्त : कलंक-गणेश चतुर्थी, चन्द्रदर्शन निषिद्ध (चन्द्रास्त : रात्रि ९-१७)

५ सितम्बर : पद्मा-परिवर्तिनी एकादशी (व्रत करने व माहात्म्य पढ़ने-सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।)

१४ सितम्बर : रविवारी सप्तमी (शाम ६-४० से १५ सितम्बर सूर्योदय तक)

१७ सितम्बर : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३३ तक) (षडशीति संक्रांति में किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना होता है। - पद्म पुराण)

१८ सितम्बर : गुरुपुष्यामृत योग (रात्रि ३-२५ से १९ सितम्बर सूर्योदय तक)

१९ सितम्बर : इंदिरा एकादशी (बड़े-बड़े पापों का नाश करनेवाला तथा नीच योनि में पड़े हुए पितरों को सद्गति देनेवाला व्रत)

***

(पृष्ठ १७ से 'भक्ति, समता और सूझबूझ...' का शेष) इसलिए सोच-विचारकर ही निर्णय लेना !'

राघोबा के तो पसीने छूट गये और युद्ध करने का उत्साह ठंडा हो गया। इस प्रकार बिना लड़े ही अहिल्याबाई ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये।

अहिल्याबाई मानती थीं कि 'सारी सम्पत्ति ईश्वर की है और सब जगह परमात्मा व्याप्त हैं।' अतः वे राजकाज का काम भी ईश्वरोपासना के रूप में ही करती थीं। उन्होंने राज्य की बागडोर सँभालते समय राज-खजाने में तुलसी दल रखा और घोषणा की थी कि 'यह राज्य मेरा नहीं बल्कि भगवान शंकर का है।' वे राजकीय पत्रों पर 'श्रीशंकर' लिखकर हस्ताक्षर करती थीं। उनका कहना था : ''मैं प्रजा को हर प्रकार से सुखी रखने की जिम्मेदार हूँ। उसका जवाब मुझे ईश्वर को देना है।''

सुख-सुविधाओं का अम्बार होने पर भी अहिल्याबाई उनमें फँसी नहीं बल्कि निरभिमानी होकर परहित के कार्यों में उनका सदुपयोग किया। साथ ही साधु-संतों की सेवा, भगवद्-जनों का सम्मान करके प्रजा के लिए आध्यात्मिकता के मार्ग का पथ-प्रदर्शन किया, सत्संग व संत-सेवा से समत्वयोग को प्राप्त हुईं।

***

(पृष्ठ १९ से 'सद्गुणों की सीख...' का शेष) दिख जाने पर 'श्रीमद् भागवत' के १०वें स्कंध के ५६-५७वें अध्याय में दी गयी 'स्यमंतक मणि की चोरी' की कथा का आदरपूर्वक पठन-श्रवण करना चाहिए। भाद्रपद शुक्ल तृतीया या पंचमी के चन्द्रमा का दर्शन करना चाहिए, इससे चौथ को दर्शन हो गये हों तो उसका ज्यादा दुष्प्रभाव नहीं होगा।

निम्न मंत्र का २१, ५४ या १०८ बार जप करके पवित्र किया हुआ जल पीने से कलंक का प्रभाव कम होता है। मंत्र इस प्रकार है :

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥

'सुंदर, सलोने कुमार ! इस मणि के लिए सिंह ने प्रसेन को मारा है और जाम्बवान ने उस सिंह का संहार किया है, अतः तुम रोओ मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार है।'

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, अध्याय : ७८)

यदि बचाओगे दूसरे के अधिकार तो सब करेंगे आपको प्यार

विजयनगर के प्रजावत्सल सम्राट थे कृष्णदेव राय। वे अपनी प्रजा के सुख-दुःख देखने के लिए अक्सर राज्य में भ्रमण करने के लिए जाते थे।

एक बार इसी हेतु से वे अपने बुद्धिमान मंत्री तेनालीराम तथा कुछ सिपाहियों के साथ निकले। एक-एक गाँव देखते-देखते दूर निकल गये। शाम हो गयी। सभी थक गये। नदी किनारे उचित जगह देखकर महाराज ने कहा : ''तेनालीराम ! यहीं पड़ाव डाल दो।''

विश्राम के लिए तम्बू लग गये। सभी भूख-प्यास से बेहाल थे। आसपास नजर दौड़ाने पर महाराज को थोड़ी दूर मटर की फलियों से लदा खेत दिखा। महाराज ने कुछ सिपाहियों को बुलाकर कहा : ''जाओ सामने के खेत में से फलियाँ तोड़कर हम दोनों के लिए लाओ और तुम भी खाओ।''

सिपाही जैसे ही जाने के लिए पीछे मुड़े तो तेनालीराम ने कहा : ''महाराज ! इस खेत का मालिक तो वह किसान है जिसने इस खेत में फसल लगायी और इसे अपने पसीने से सींचा है। आप इस राज्य के राजा अवश्य हैं पर इस खेत के मालिक नहीं। बिना उसकी आज्ञा के इस खेत की एक भी फली तोड़ना अपराध है, राजधर्म के विरुद्ध आचरण है, जो एक राजा को कदापि शोभा नहीं देता।''

महाराज को तेनालीराम की बात उचित लगी, सिपाहियों को आदेश दिया : ''जाओ, इस खेत के मालिक से फलियाँ तोड़ने की अनुमति लेकर आओ।''

सिपाहियों को खेत में देख खेत का मालिक घबरा गया। सिपाहियों ने कहा : ''महाराज स्वयं तुम्हारे खेत के नजदीक विश्राम कर रहे हैं और अपनी भूख मिटाने के लिए खेत से थोड़ी-सी फलियाँ तोड़ने की अनुमति चाहते हैं।'' यह सुन उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा ! प्रसन्नता और राजा के प्रति अहोभाव से उसका हृदय भर गया। वह दौड़ा-दौड़ा महाराज के पास पहुँचा।

राजा को प्रणाम किया और कहा : ''महाराज ! यह राज्य आपका, यह खेत आपका। आप प्रजापालक हैं, मैं आपकी प्रजा हूँ। मुझसे अनुमति लेने की आपको कोई आवश्यकता नहीं थी फिर भी आपने एक गरीब किसान के अधिकार को इतना महत्त्व दिया ! आप धन्य हैं !''

किसान खुद सिपाहियों के साथ खेत में गया और फलियाँ तोड़कर महाराज के सामने प्रस्तुत कीं, फिर आज्ञा लेकर गाँव गया।

थोड़ी देर बाद वह वापस आया। उसके साथ गाँव के कुछ लोग और भी थे जो अपने साथ सभीके लिए तरह-तरह की भोजन-सामग्री लाये। इतना अपनापन, प्रेम व सम्मान पाकर महाराज बड़े प्रसन्न हुए।

बुद्धिमान तेनालीराम मुस्कराकर बोले : ''जब हम अपने अहं को न पोसकर दूसरों के अधिकारों का खयाल रखते हैं तो लोग भी हमारा खयाल रखते हैं, उनके दिल में हमारे लिए आदर और प्यार बढ़ जाता है और वास्तविक आदरणीय, सर्वोपरि, सर्वेश्वर परमात्मा भी भीतर से प्रसन्न होते हैं।''

समाज को सुख-शांति, समृद्धि देनेवाला ग्रंथ
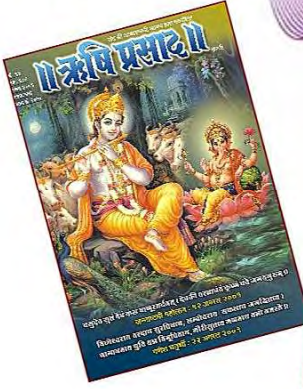
(ऋषि प्रसाद जयंती के अवसर पर अहमदाबाद में सम्पन्न संत-सम्मेलन)
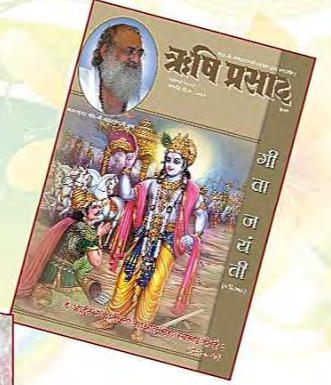
साँईं किरणजी महाराज, साँईं मानव सेवा संगठन, शिरडी : आप लोगों (ऋषि प्रसाद घर-घर पहुँचानेवाले पुण्यात्माओं) के दर्शन करनेमात्र से मैं कृतार्थ हो गया क्योंकि जो कार्य देवता भी नहीं कर सकते थे वह कार्य आप कर रहे हैं 'ऋषि प्रसाद' लोगों तक पहुँचा के। कितनी ही पुस्तकें, पत्रिकाएँ पढ़ते हैं परंतु 'ऋषि प्रसाद' जैसा सार कम शब्दों में कहीं देखने को मिलेगा नहीं। हमारे वेद, पुराण आदि जो ग्रंथ हैं, उनके अंदर जो सारगर्भित खजाना है, जो पारस है वह निकालकर आम जनता के बीच बापूजी ने लाकर रख दिया 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका और 'ऋषि दर्शन' डीवीडी मैगजीन के माध्यम से कि इस मंत्र से यह लाभ होता है, यह करने से यह होता है...। आप महीना-दो महीना इस पत्रिका को पढ़ेंगे-देखेंगे और लाभ लेंगे तो आपके घर में सुख-शांति, धन-वैभव की प्राप्ति होने लगेगी। आदमी आज करोड़ों रुपये खर्च करके वह शांति प्राप्त नहीं कर पा रहा है जो ऋषि प्रसाद के माध्यम से उसके पाठक अपने जीवन और घर में अनुभव कर रहे हैं।

ऋषि प्रसाद बापूजी का ही रूप है इसलिए इस पत्रिका को भी हम प्रणाम करते हैं। इससे आज विश्व के कोने-कोने में लोग अपने-आपको परिवर्तित कर रहे हैं। आप निराश मत होइये, दुःखी मत होइये कि लोग यह-वह कहते हैं... कहने दो लोगों को। निंदकों ने तो भगवान को नहीं छोड़ा, रामजी को नहीं छोड़ा, कृष्णजी को नहीं छोड़ा, गुरु नानकजी और कबीरजी को नहीं छोड़ा।

आज हमको दिख रहा है कि बापू कष्ट में हैं परंतु आप सभीको सुख पहुँचाने के लिए वे अपना कष्ट नहीं बताते हैं बल्कि अपने चेहरे पर मुस्कान बनाये रखते हैं तो यह सेवा करते हुए आपकी मुस्कान दस गुना बढ़नी चाहिए, चाहे कोई कितनी निंदा करे, कितनी बुराई करे। आप गुरु के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं, यही गुरुदक्षिणा है गुरुपूर्णिमा की।

आप सबकी सेवा देख रहे हैं बापूजी। ब्रह्म की निगाह सब जगह रहती है। बापूजी देख रहे हैं कि मेरे प्यारे-प्यारे जो साधक हैं, जिन्होंने सेवा अपने हाथ में ले रखी है ऋषि प्रसाद की, उनमें आज कैसा जोश है ! चेहरे पर रौनक है, सेवा का भाव है !

महंत श्री रामगिरि बापू, महानिर्वाणी अखाड़ा, मेहसाणा (गुजरात) : ऋषि प्रसाद जयंती पर सभी साधक भाई-बहनों से मैं विनती करता हूँ कि आप बस इतना ही करो कि आप जहाँ भी रहते हो, वहाँ ऋषि प्रसाद बाँटो। लोगों को भगवान के रास्ते चलाना तो बड़े-में-बड़ी सेवा है। आप बहुत ही भाग्यशाली हैं क्योंकि आपको 'ऋषि प्रसाद' की सेवा करने का मौका मिल रहा है।

मैं बहुत जगह पर जाता हूँ, बहुत जगह पर घूमता हूँ लेकिन मुझे इस आश्रम से जो आध्यात्मिक खजाना मिला है वह कहीं से नहीं मिला।

आचार्य श्री विकासजी, संस्कृत भाषा के विद्वान व भागवताचार्य, हिमाचल प्रदेश : ऋषि प्रसाद जो शब्द हैं उनका अर्थ है - ऋषिः दर्शनात् । जो हमें परमात्मा के दर्शन करवाते हैं वे हैं 'ऋषि' । प्रकर्षेण साधयेति आत्मनि यत् सः प्रसादः । जो हमें विशेष प्रकार से अपनी आत्मा से जोड़े, परमात्मा में लगा दे उसीका नाम है 'प्रसाद' । प्रसादस्तु प्रसन्नता। 'प्रसाद' का दूसरा अर्थ है प्रसन्नता । जो हमें ऋषियों के कृपा-प्रसाद से परमात्म-अनुभूति की ओर ले जाती है और परम आनंद का रसास्वादन कराती है वह है 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका और 'ऋषि दर्शन' डीवीडी मैगजीन।

जिन्होंने हमें मंत्रदीक्षा देकर धन्य किया, वे ही ऋषि हैं, वे ही गुरु हैं, वे ही हैं हमारे बापूजी । 'ऋषि प्रसाद' का अर्थ है कि हम अपने गुरु से, अपने परमात्मा से, अपने मूल आत्मस्वरूप से जुड़ जायें और यह काम किया है ऋषि प्रसाद ने और इस पत्रिका को आप सभीने घर-घर पहुँचाया है, पहुँचा रहे हैं और पहुँचाते ही रहेंगे । आप लोग धन्य हैं !

****

श्री पंकजभाई रामी, सनातन संस्था एवं हिन्दू जनजागृति समिति के गुजरात-प्रतिनिधि : १९९० से 'ऋषि प्रसाद' धर्मकार्य के पथ पर कार्यरत है, २४ साल हो गये । परम पूज्य आशारामजी बापू द्वारा उनके भक्तों और समस्त समाज को दिया हुआ अनमोल सत्संग ऋषि प्रसाद के माध्यम से पाठकों को घर बैठे मिल रहा है । ऋषि प्रसाद द्वारा करोड़ों लोगों को धर्मशिक्षण मिल रहा है और इसके आधार पर लोगों को धर्मकार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है । आनेवाले युग में ऋषि प्रसाद की व्यापकता बढ़े, हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार हो और बहुत जल्दी ही हिन्दू राष्ट्र की स्थापना हो ऐसी ईश्वर के चरणों में मैं प्रार्थना करता हूँ।

संतों की अपकीर्ति के पीछे अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र है । हमें इन षड्यंत्रों को समझ लेना चाहिए। जगद्गुरु शंकराचार्य, परम पूज्य आशारामजी बापू और अन्य कई संतों ने धर्मांतरण रोकने के बहुत बड़े पैमाने पर प्रयास किये हैं । इसके कारण धर्मांतरण का षड्यंत्र विफल हो रहा है । बापू के कारण आपके जीवन में हुए अमूल्य परिवर्तन याद करें और अन्यों को भी बतायें। बापू के विषय में भ्रम में फँसे लोगों को अपने और लाखों भक्तों के अनुभव बताकर उनका प्रबोधन करें।

****

नीलम दुबे, आश्रम मीडिया प्रवक्ता : गुरुपूर्णिमा पहले बापूजी जहाँ होते थे वहाँ मनती थी परंतु आज बापूजी जिस-जिस दिल में हैं वहाँ मनी है और ऐसी मनी है कि दुनिया ने देखा । वे अखबार जो हमेशा अनर्गल बातें लिखते थे, उन्होंने लिखा कि 'आशारामजी बापू के साधक और उनके बीच कोई नहीं आ सकता ।' यह हम नहीं कह रहे हैं, यह मीडिया कह रहा है । साधकों ने गुरुपूर्णिमा पर सिद्ध कर दिया कि उनके और बापूजी के बीच कोई नहीं आ सकता।

आप यह मत समझिये कि सुप्रचार में जुड़कर आप बापूजी को कुछ दे रहे हैं । नहीं, इससे आपको इतना मिलेगा कि आप बटोर नहीं सकेंगे । सुप्रचार अभियान बहुत आसान है । सबसे पहले आप दृढ़ संकल्प कीजिये कि आपके सामने कोई कुप्रचार करेगा तो आप जवाब देने के लिए तैयार हैं। कुप्रचार का जवाब अगर अभी नहीं दिया तो फिर आपको मौका नहीं मिलेगा।

'ऋषि दर्शन' एक बहुत ही लाभकारी, सुंदर विडियो पत्रिका है। किस महीने में कौन-से त्यौहार आ रहे हैं ? किस ऋतु में क्या खाना चाहिए, क्या नहीं खाना चाहिए ? किस संत की कब जयंती है, कैसे मनानी चाहिए ? कौन-सी पुण्यदायी तिथि कब आ रही है और उसका विधि-विधान क्या है ? ऐसी अनेक बहुत ही उपयोगी जानकारियाँ आपको ऋषि दर्शन में मिलती हैं।

श्री राजेन्द्रस्वरूपजी, श्रीराम कथाकार, मानसरोवर : गायत्री महामंत्र के मंत्रद्रष्टा विश्वामित्रजी हैं तो मैं कहूँगा 'ऋषि प्रसाद' महामंत्र के मंत्रद्रष्टा ब्रह्मज्ञानी पूज्य बापूजी महाराज हैं। बापू ने 'ऋषि प्रसाद' महामंत्र को कागजों के शब्दों में पिरोकर सहजता के साथ आपके पास रखा है। 'ऋषि प्रसाद' का एक ही कार्य है कि आप सुखमय जीवन जियें, राष्ट्र विश्वगुरु बने और पूरा ब्रह्मांड आनंद से भर जाय।

बापू और ऋषि प्रसाद एक हैं। कागज शरीर है तो इसके शब्द बापू की आत्मा हैं। जिसने भी जाने-अनजाने में ऋषि प्रसाद का स्पर्श किया, समझ लो वह लोहा होगा तो स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगा।

बापू को लोगों ने इस मोटेरा आश्रम में देखा है परंतु वास्तव में बापू केवल उतने ही नहीं हैं, बापू तो सतयुग, द्वापरयुग व त्रेतायुग के मंत्रद्रष्टा ऋषियों के एक समूह हैं। विभिन्न संतों ने जो छोटी-छोटी नदियाँ बहायी थीं, उन सबको बापू ने विभिन्न जन्मों की तपस्या से आत्मसात् किया और कलियुग में समुद्र बनकर हम सबके साथ हैं।

बापू सनातन धर्म के क्षीर सागर हैं। आपकी एक से डेढ़ घंटे की सेवा का जो समय है, वह आपकी अंजलि है। आप अंजलि भरिये और इसे प्यासे लोगों को ले जाकर पिलाइये। आपके माँ-बाप आपको धन्यवाद देंगे क्योंकि उन्होंने आपको इसीलिए जन्म दिया है। आपको यह धरती धन्यवाद देगी।

बापूजी निर्दोष हैं। बापूजी पर घृणित आरोप लगाये जाने का यह प्रकरण आम नहीं है, खास है। यह ब्रह्मांड की व्यवस्थाओं को बदलने के लिए ही हुआ है।

****

सगर्भावस्था के दौरान आचरण

* दिन में नींद व देर रात तक जागरण न करे। दोपहर में विश्रांति ले, गहरी नींद वर्जित है।
* सीधे व घुटने मोड़कर न सोये अपितु करवट बदल-बदलकर सोये।
* सख्त व टेढ़े स्थान पर बैठना, पैर फैलाकर और झुककर ज्यादा समय बैठना वर्जित है।
* गर्भिणी अपानवायु, मल, मूत्र, डकार, छींक, प्यास, भूख, निद्रा, खाँसी, आयासजन्य श्वास, जम्हाई, अश्रु इन स्वाभाविक वेगों को न रोके तथा यत्नपूर्वक वेगों को उत्पन्न न करे।
* इस काल में समागम सर्वथा वर्जित है।
* सुबह की शुद्ध हवा में टहलना लाभप्रद है।
* आयुर्वेदानुसार ९ मास तक प्रवास वर्जित है।
* चुस्त व गहरे रंग के कपड़े न पहने।
* अप्रिय बात न सुने व वाद-विवाद में न पड़े। जोर से न बोले और गुस्सा न करे। मन में उद्वेग उत्पन्न करनेवाले वीभत्स दृश्य, टीवी सीरियल न देखे व ऐसे साहित्य, नॉवेल आदि भी पढ़े-सुने नहीं। तीव्र ध्वनि एवं रेडियो भी न सुने।
* दुर्गंधयुक्त स्थान पर न रहे तथा इमली के वृक्ष के नजदीक न जाय।
* शरीर के समस्त अंगों को सौम्य कसरत मिले इस प्रकार के घर के कामकाज करते रहना गर्भिणी के लिए अति उत्तम होता है।
* सगर्भावस्था में प्राणवायु की आवश्यकता अधिक होती है अतः दीर्घ श्वसन (दीर्घ श्वास) व हलके प्राणायाम का अभ्यास करे। पवित्र, कल्याणकारी, आरोग्यदायक भगवन्नाम-जप करे।
* मन को शांत व शरीर को तनावरहित रखने के लिए प्रतिदिन थोड़ा समय शवासन (शव की नाईं पड़े रहना) का अभ्यास अवश्य करे।
* शांति होम एवं मंगल कर्म करे। देवता, ब्राह्मण, वृद्ध एवं गुरुजनों को प्रणाम करे।
* भय, शोक, चिंता, क्रोध को त्यागकर नित्य आनंदित व प्रसन्न रहे।

ऊपर दी गयी सावधानियों का गर्भ व मन से गहरा संबंध होता है। अतः गर्भिणी दिये गये निर्देशों के अनुसार अपनी दिनचर्या निर्धारित करे।

ऊँची समझ

एक बार एक संत विचरण करते हुए दक्षिण भारत के किसी गाँव में रुके। एक ग्रामीण ने प्रार्थना की : ''बाबा ! हमारे यहाँ भोजन के लिए पधारें।''

निश्चित दिन संत भोजन करने पधारे। गृहिणी अत्यंत श्रद्धा से संतश्री को भोजन परोसने लगी लेकिन रसोई से सामान लाने-ले जाने में वह कुछ पैर घसीटकर चल रही थी। इससे संत ने अनुमान लगाया कि 'इसके पैर में कुछ तकलीफ है।' संतश्री ने करुणावश पूछ लिया : ''बेटी ! तेरे पाँव में कोई तकलीफ है क्या ?''

महिला : ''हाँ बाबा, मैं अपंग हूँ।''

महिला का इतना कहना ही था कि उसका पति तुरंत बोल पड़ा : ''बाबा ! परंतु ये घर सँभालने में बड़ी कुशल है। घर का सारा काम स्वयं करती है - गेहूँ पीसना, भोजन बनाना, बर्तन साफ करना... मुझे केवल पानी भरने का कार्य ही देती है। और चरित्रवान भी है।''

पति के मुख से अपनी प्रशंसा सुन वह महिला थोड़ी लजा गयी और बात बदलते हुए बोली : ''बाबा ! ये मेरे पतिदेव सचमुच देवता हैं। शादी के पहले तो ये निगुरे थे परंतु मेरे आग्रह पर इन्होंने भी सद्गुरु से दीक्षा ले ली। अब खुद तो गुरुमंत्र-जप करते हैं और मुझे भी प्रेरित करते रहते हैं। जहाँ भी सत्संग होता है मुझे भी ले जाते हैं। साधु-संतों की सेवा खोज लेते हैं, जिसमें मुझे भी सहभागी होने का सौभाग्य मिल जाता है। मैं अपंग हूँ - इस बात का एहसास भी नहीं होने देते।''

संत प्रसन्न हुए और उस गृहस्थ से पूछा : ''तुम्हारी पत्नी अपंग कैसे हो गयी ?''

''बाबा ! यह तो जन्म से ही है।''

संत ने चकित हो पूछा : ''बेटा ! तो तुमने... ?''

पति समझ गया कि बाबा क्या पूछना चाहते हैं, वह तुरंत बोला : ''बाबा ! मैंने संतों के श्रीमुख से सुना है कि 'शरीर की सुंदरता ही असली सुंदरता नहीं है। यदि दिव्य संस्कारों से ओतप्रोत मन है तो वह शरीर की सुंदरता से बढ़कर है।' यह सत्संगी है, चरित्रवान है तो शरीर की अपंगता इन सभी सद्गुणों के आगे नगण्य है। अतः स्वेच्छा से, सहर्ष मैंने विवाह स्वीकारा है।''

संतप्रवर उस ग्रामीण सद्गृहस्थ के उत्तम विचारों व श्रेष्ठ आचरण से प्रसन्न होकर बोले : ''वत्स ! जिस परिवार में तुम्हारे जैसा उच्च, उदार विचारोंवाला पति हो, दोनों में परस्पर समादर तथा सेवाभाव हो, संतों के प्रति श्रद्धा व आदर-सत्कार हो, उस परिवार का नर नारायणरूप और नारी नारायणीरूपा कहलाने योग्य है और वह घर वैकुंठ है।''

पति-पत्नी एक-दूसरे को किस प्रकार उन्नत करें यह बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं कि ''जब पति-पत्नी का नाता हो जाता है तो दोनों को एक-दूसरे की उन्नति का सोचना चाहिए। पति या पत्नी यदि तन, मन अथवा बुद्धि से कमजोर है तो एक-दूसरे का सहयोग करके एक-दूसरे की कमी को दूर करना चाहिए। एक-दूसरे की योग्यता उभारने का यत्न करना चाहिए।

पति-पत्नी एक-दूसरे की रक्षा करें, एक-दूसरे की कमजोरी को दूर करने का यत्न करें और एक-दूसरे को संयम-सदाचार व सत्संग की तरफ अग्रसर कर एक-दूसरे के जीवन में निखार लायें। भारतीय संस्कृति में इसी व्यवस्था का नाम विवाह है।''

श्राद्ध : एक पुण्यदायी, भगवदीय कर्म

(श्राद्ध पक्ष : ९ सितम्बर से २३ सितम्बर)

गरुड़ पुराण (१०.५७-५९) में आता है कि 'समयानुसार श्राद्ध करने से कुल में कोई दुःखी नहीं रहता।

...आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम् ॥

पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्।...

पितरों की पूजा करके मनुष्य आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, श्री, पशुधन, सुख, धन और धान्य प्राप्त करता है।

देवकार्य से भी पितृकार्य का विशेष महत्त्व है। देवताओं से पहले पितरों को प्रसन्न करना अधिक कल्याणकारी है।'

जो लोग श्राद्ध नहीं करते उनके पितर असंतुष्ट रहते हैं तथा उनके घर में सुख-शांति व समृद्धि की कमी, बीमारियाँ - यह सब होता है। इसलिए अच्छी संतान व स्वास्थ्य के लिए भी पितृ-श्राद्ध करना चाहिए। जो श्राद्ध करता है और दूसरों की भलाई करता है उसको दूसरे लोग कुछ देते हैं तो देनेवाले को पुण्य हो जाता है, आनंद हो जाता है।

श्राद्ध में जब तुलसी के पत्तों का उपयोग होता है तो पितर तृप्त रहते हैं और विष्णुलोक को चले जाते हैं। बड़े तृप्त होते हैं तो बड़ा आशीर्वाद ! मैं तो तुलसी के प्रयोग से ही श्राद्ध करता हूँ।

श्राद्ध में उत्तम क्या ?

तीन चीजें श्राद्ध में प्रशंसनीय हैं :

(१) शुद्धि

(२) अक्रोध

(३) अत्वरितता : जल्दबाजी नहीं, धैर्य।

तीन चीजें श्राद्ध में पवित्र होती हैं :

(१) तिल

(२) बेटी का बेटा - दौहित्र

(३) कुतपकाल

दोपहर ११:३६ से लेकर १२:२४ तक विशेषकाल माना जाता है। थोड़ा आगे-पीछे हो जाय तो कोई बात नहीं लेकिन इस काल में श्राद्ध की विशेष पवित्रता होती है। श्राद्ध करने के आरम्भ और अंत में इस श्लोक का तीन बार उच्चारण करने से श्राद्ध की त्रुटि क्षम्य हो जाती है, पितर प्रसन्न हो जाते हैं और आसुरी शक्तियाँ भाग जाती हैं :

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव भवन्त्युत ॥

'समस्त देवताओं, पितरों, महायोगियों, स्वधा एवं स्वाहा - सबको हम नमस्कार करते हैं। ये सब नित्य (शाश्वत) फल प्रदान करनेवाले हैं।' (वायु पुराण : ७४.१६)

श्राद्ध में आवश्यक सात शुद्धियाँ

श्राद्धकाल में सात विशेष शुद्धियों का ध्यान रखना चाहिए :

(१) नहा-धोकर शरीर शुद्ध हो।

(२) श्राद्ध की द्रव्य-वस्तु शुद्ध हो।
(३) स्त्री शुद्ध हो, मासिक धर्म में न हो।
(४) जहाँ श्राद्ध करते हैं वह भूमि शुद्ध हो। गोझरण से, देशी गाय के गोबर से लीपन की हुई हो।
(५) मंत्र का शुद्ध उच्चारण करें।
(६) ब्राह्मण भी शुद्ध भाववाला हो और तम्बाकू, जर्दा आदि का सेवन न करता हो।
(७) मन को भी शुद्ध रखें।

पितरों की विशेष प्रसन्नता प्रदायक : भगवन्नाम संकीर्तन

पितरों की सद्गति के लिए कीर्तन भी एक उपाय है। उनको प्रार्थना करें कि 'हे पितृदेवो ! हम और कुछ नहीं कर सकते तो आपके लिए भगवान के नाम का कीर्तन करते हैं। आपको भगवान तृप्त करेंगे, आप अभी से ही तृप्त हों क्योंकि भगवान का नाम तो तुरंत तृप्ति पहुँचाता है।' इसके बाद पितरों को प्रसन्न करने के लिए कीर्तन करो। पितरों की तृप्ति के लिए २ या १ दिन की अखंड नामधुन (भगवन्नाम संकीर्तन) अथवा ६ घंटे का कीर्तन रखो। यदि ६ घंटे न कर सको तो २-३ घंटे ही कीर्तन करो। इससे उनका भी भला होगा, आप भी तृप्त हो जायेंगे, अड़ोस-पड़ोस भी तृप्त हो जायेगा। भगवान का नाम तृप्ति देता है।

श्राद्ध से सद्गति

जिनको जीवन में श्राद्ध का महत्त्व नहीं पता, वे लोग बड़े घाटे में रहते हैं। हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस-गोरखपुर के जाने-माने सज्जन संत एक बार मुंबई में रात्रि को समुद्र किनारे बैठे थे। उनके सामने आकर एक पारसी सज्जन (प्रेत) ने प्रार्थना की कि 'हम जाति के पारसी थे इसलिए घरवालों ने श्राद्ध नहीं किया। मेरी रूह (आत्मा) भटक रही है। आप मेरा श्राद्ध करायें तो मेरी सद्गति होगी।'

हनुमानप्रसाद पोद्दार ने उनका श्राद्ध कराया। दूसरे दिन उस पारसी का जीवात्मा सपने में बड़ा प्रसन्न होकर उनका अभिवादन कर रहा था कि 'अब मैं ऊँची यात्रा कर रहा हूँ। मेरी सद्गति हो गयी, नहीं तो मैं भटक रहा था।'

महर्षि जाबालि ने कहा है : ''श्राद्ध से पुत्र, आयु-आरोग्य, अतुल ऐश्वर्य, यश और अभिलाषित वस्तुओं की प्राप्ति होती है।'' क्योंकि पितरों का तर्पण-श्राद्ध करने से उन्हें तृप्ति होती है तो उनके तृप्त हृदय से अंतर्यामी प्रभु जो आपके हृदय में भी बैठे हैं, वे आपको शुभ संकल्प से सम्पन्न करते हैं। अतः जो श्राद्ध करते हैं, पितरों को कुछ तर्पण करते हैं, पिंडदान आदि करते हैं उन्हें दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि, यश, स्वर्ग आदि की प्राप्ति, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, सुख, साधन तथा धन-धान्य आदि की कमी नहीं रहती।

सर्वपित्री अमावस्या पर 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन

जिन्हें अपने पूर्वजों की परलोकगमन की तिथियाँ मालूम नहीं हैं, उन्हें सर्वपित्री अमावस्या (२३ सितम्बर) के दिन श्राद्ध-कर्म करना चाहिए। विभिन्न संत श्री आशारामजी आश्रमों में इस दिन 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन होता है, जिसमें आप सहभागी हो सकते हैं। इस हेतु अपने नजदीकी आश्रम में १५ सितम्बर तक पंजीकरण करा लें।

श्राद्ध हेतु अपने साथ दो बड़ी थाली, दो कटोरी, दो चम्मच, ताँबे का एक लोटा और आसन लेकर आयें। अन्य आवश्यक सामग्री श्राद्ध-स्थल पर उपलब्ध रहेगी। श्राद्धकर्म सम्पन्न होने के बाद लाये हुए बर्तन सब वापस ले जाने हैं। अधिक जानकारी हेतु पहले ही अपने नजदीकी आश्रम से सम्पर्क कर लें।

(श्राद्ध से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम की पुस्तक 'श्राद्ध महिमा' पढ़ें।)

वर्तमान युग में शिक्षा-प्रणाली और शिक्षकों की भूमिका

(शिक्षक दिवस : ५ सितम्बर)

शिक्षक साधारण नहीं होता है, सृजन और प्रलय उसकी गोद में खेलते हैं। आचार्य चाणक्य ने एक नन्हे से बच्चे को ऐसी शिक्षा, ऐसे संस्कार दिये कि आगे चलकर वह चक्रवर्ती सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य बना और उसने अखंड भारत के निर्माण का कार्य किया। ऐसे

असंख्य उदाहरण हैं इतिहास में। तात्पर्य यह है कि शिक्षक के जीवन एवं शिक्षाओं का विद्यार्थियों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। शिक्षक ऐसा न समझें कि केवल पुस्तकों में लिखी आजीविका चलाने की शिक्षा देकर हमने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया। लौकिक विद्या के साथ-साथ उन्हें चरित्र-निर्माण की, आदर्श मानव बनने की शिक्षा भी दीजिये। आपकी इस सेवा से भारत का भविष्य उज्ज्वल बनेगा तो आपके द्वारा सुसंस्कारी बालक बनाने की राष्ट्र-सेवा, मानवसेवा हो जायेगी।

मुंडकोपनिषद् के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है : अपरा विद्या और परा विद्या। संसार के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं, वह अपरा विद्या है। जैसे भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास आदि। दूसरी विद्या है आत्मा-परमात्मा का ज्ञान, जो कि देश-काल-कारण से परे है, इसे परा विद्या कहते हैं।

प्राचीनकाल में हमारे शिक्षा-संस्थानों में, जिन्हें हम 'गुरुकुल' कहते थे, ये दोनों प्रकार की विद्याएँ शिष्य को दी जाती थीं। किंतु आजकल के अधिकांश शिक्षा-संस्थानों में केवल अपरा (लौकिक) विद्या ही

दी जाती है, परा (अलौकिक) विद्या को कोई स्थान ही नहीं दिया जाता। आत्माभिव्यक्ति एवं आत्मानुभूति की पूर्णतः उपेक्षा की गयी है। यही कारण है कि केवल आधुनिक शिक्षा को ही केन्द्र बनानेवाले समृद्ध राष्ट्रों की अति दयनीय स्थिति है और उनके विद्यार्थियों में अशांति, ईर्ष्या, तनाव, चिंता, अस्वस्थता आदि कई दुर्गुण-समस्याएँ बाल्यकाल से ही पनप रही हैं।

विकसित राष्ट्रों की दयनीय स्थिति

आज आध्यात्मिकता से दूर रहनेवाले सभी देशों में मानसिक अशांति व्याप्त है। युनेस्को (संयुक्त राष्ट्र की विशेष संस्था) इस विषय में सर्वाधिक चिंतित है क्योंकि नयी पीढ़ी ने 'जानने' के बदले 'करने' की शिक्षा अपनायी है। इसलिए नयी पीढ़ी नशा, आत्महत्या आदि समस्याओं और एड्स जैसी बीमारियों की चपेट में आ रही है।

सोचा जाता है कि 'अधिक सम्पत्ति अर्थात् अधिक सुख' किंतु सांख्यकीय आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि सच्चाई इसके ठीक विपरीत है।

अमेरिका, जापान, स्वीडन आदि विकसित देशों में प्रति व्यक्ति आय बहुत अधिक है किंतु वे सुख में नहीं बल्कि तनाव और आत्महत्या में सबसे आगे हैं।

* युनेस्को के अनुसार 'अमेरिका, जापान और स्वीडन में युवावर्ग में ५४% मृत्यु आत्महत्या से होती है।'

* जापान के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार '४२ और इससे अधिक आयु के ४४% जापानी मानसिक विक्षिप्तता के शिकार हैं।'

शिक्षा-प्रणाली की भूमिका

तनाव व अशांति भरे वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए समय की माँग है 'गुरुकुल शिक्षा-पद्धति की पुनर्स्थापना', जिससे आजीविका चलाने में उपयोगी विद्या के साथ-साथ विद्यार्थियों को संयम-सदाचार, सच्चाई, परदुःखकातरता आदि सद्गुण पाने की एवं ईश्वरप्राप्ति की विद्या भी मिले, उनके जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम जैसे गुणों का सहज में विकास हो और किसी भी प्रकार के छल-कपट तथा मानसिक तनाव के बिना उन्हें हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो।

पूज्य बापूजी कहते हैं कि ''लौकिक विद्या तो पा ली लेकिन योगविद्या और आत्मविद्या नहीं पायी तो लौकिक चीजें बहुत मिलेंगी लेकिन भीतर अशांति होगी, दुराचार होगा। लौकिक विद्या को पाकर थोड़ा कुछ सीख लिया, यहाँ तक कि बम बनाना भी सीख गये फिर भी हृदय में अशांति की आग जलती रहेगी।

जो लोग योगविद्या और आत्मविद्या का अभ्यास करते हैं, सुबह के समय थोड़ा योग व ध्यान का अभ्यास करते हैं वे लौकिक विद्या में भी शीघ्रता से सफल होते हैं, लौकिक विद्या के भी अच्छे-अच्छे रहस्य वे खोज सकते हैं।

स्वामी विवेकानंद लौकिक विद्या तो पढ़े थे, साथ ही उन्होंने आत्मविद्या का ज्ञान भी प्राप्त किया था। अतः ऐहिक विद्या को अगर योग और आत्म विद्या का सम्पुट दिया जाय तो विद्यार्थी ओजस्वी-तेजस्वी बनता है । योगविद्या और आत्मविद्या को भूलकर सिर्फ ऐहिक विद्या में ही पूरी तरह से गर्क हो जाना मानो अपने जीवन का अनादर करना है।''

इन्हीं उद्देश्यों से पूज्य बापूजी ने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली पुनः आरम्भ की । इन गुरुकुलों में विद्यार्थी ऐहिक सफलता की बुलंदियाँ तो छूते ही हैं, साथ ही योग और आत्म विद्या का भी ज्ञान पाकर अपना इहलोक और परलोक सँवार रहे हैं।

शिक्षकों की भूमिका

डॉ. राधाकृष्णन् ने स्पष्ट शब्दों में कहा है : ''आप केवल ईंटों से राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते । आपको युवकों के मन-मस्तिष्क को सुदृढ़ करना होगा। केवल तभी राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।''

चरित्र-निर्माण आध्यात्मिकता के बिना असम्भव है। आध्यात्मिक गुरु सम्पूर्ण विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं । उनके मार्गदर्शन से समाज का चहुँमुखी विकास होता है।

अतः राष्ट्र-निर्माण के लिए शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे विद्यार्थियों को ऐहिक शिक्षा के साथ यौगिक व आध्यात्मिक शिक्षा से भी सुसम्पन्न करें । इससे बच्चों में तीव्र बुद्धि के साथ चारित्रिक व नैतिक गुणों का विकास होगा और तभी विश्वशांति एवं संगठित, समृद्ध राष्ट्र-निर्माण के द्वार खुल पायेंगे । इसके लिए शिक्षकों को भी इन विद्याओं से सुसम्पन्न होना होगा, तभी वे बच्चों को सही शिक्षा दे पायेंगे। अतः शिक्षकों को किन्हीं हयात आत्मानुभवनिष्ठ आध्यात्मिक गुरु से मार्गदर्शन लेना चाहिए और बच्चों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

सर्व पापनाशक व्रत

(अजा एकादशी : २१ अगस्त)

युधिष्ठिर ने पूछा : ''जनार्दन ! भाद्रपद के कृष्ण पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ?''

श्रीकृष्ण बोले : ''राजन् ! भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम 'अजा' है। भगवान हृषीकेश का पूजन करके जो यह व्रत करता है उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

पूर्वकाल में हरिश्चंद्र नामक एक विख्यात चक्रवर्ती राजा हो गये हैं, जो समस्त भूमंडल के स्वामी और सत्यप्रतिज्ञ थे। किसी कर्म का फल प्राप्त होने पर उन्हें राज्य से भ्रष्ट होना पड़ा और अपनी पत्नी व पुत्र को भी बेच देना पड़ा। फिर स्वयं को भी बेच दिया। पुण्यात्मा होते हुए भी उन्हें चांडाल का दासत्व स्वीकार करना पड़ा। वे मुर्दों का कफन लिया करते थे। इतने पर भी नृपश्रेष्ठ हरिश्चंद्र सत्य से विचलित नहीं हुए।

अनेक वर्ष व्यतीत हो गये। वे अत्यंत दुःखी होकर सोचने लगे, 'क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? कैसे मेरा उद्धार होगा ?' इस प्रकार चिंता करते-करते वे शोक के समुद्र में डूब गये।

राजा को शोकातुर जानकर महर्षि गौतम उनके पास आये। नृपश्रेष्ठ ने उनके चरणों में प्रणाम कर अपना सारा दुःखमय वृत्तांत सुनाया।

महर्षि गौतम बोले : ''राजन् ! आज से ७वें दिन भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अत्यंत कल्याणमयी 'अजा' एकादशी आ रही है। इस दिन व्रत रखकर उपवास व रात्रि-जागरण करना। इससे पापों का अंत होगा।''

महर्षि अंतर्धान हो गये। राजा हरिश्चंद्र ने उस उत्तम व्रत का अनुष्ठान किया। उसके प्रभाव से राजा सारे दुःखों से पार हो गये। उन्हें पत्नी पुनः प्राप्त हुई और मरे हुए पुत्र का जीवन मिल गया। देवलोक से फूलों की वर्षा होने लगी।

एकादशी के प्रभाव से राजा ने निष्कंटक राज्य प्राप्त किया और अंत में वे पुर-जन तथा परिजनों के साथ स्वर्गलोक को प्राप्त हो गये।

युधिष्ठिर ! जो यह व्रत करते हैं वे सब पापों से मुक्त हो स्वर्गलोक जाते हैं। इस माहात्म्य को पढ़ने-सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।''

जो अकाल को बदले सुकाल में

(पद्मा-परिवर्तिनी एकादशी : ५ सितम्बर)

युधिष्ठिर ने पूछा : ''केशव ! भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है और उसकी विधि क्या है ?''

भगवान श्रीकृष्ण बोले : ''राजन् ! इस विषय में मैं तुम्हें एक आश्चर्यजनक कथा सुनाता हूँ, जिसे ब्रह्माजी ने महात्मा नारद से कहा था।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी ने कहा : ''मुनिश्रेष्ठ ! भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की एकादशी 'पद्मा' के नाम से विख्यात है। यह उत्तम व्रत अवश्य करने योग्य है। सूर्यवंश में चक्रवर्ती, सत्यप्रतिज्ञ और प्रतापी राजर्षि मांधाता हो गये। वे प्रजा का अपने औरस पुत्रों की भाँति धर्मपूर्वक पालन करते थे। उनके राज्य में अकाल, व्याधियों का प्रकोप एवं मानसिक चिंताएँ नहीं होती थीं। उनकी प्रजा निर्भय तथा धन-धान्य से समृद्ध थी। उनके कोष में केवल न्यायोपार्जित धन का ही संग्रह था। राज्य में समस्त वर्णों और आश्रमों के लोग

अपने-अपने धर्म में लगे रहते थे। राज्य की भूमि कामधेनु के समान फल देनेवाली थी। प्रजा बहुत सुखी थी।

एक समय राज्य में ३ वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। तब सम्पूर्ण प्रजा ने महाराज के पास आकर कहा : ''नृपश्रेष्ठ ! अन्न के बिना प्रजा का नाश हो रहा है, अतः ऐसा कोई उपाय कीजिये जिससे हमारे योगक्षेम का निर्वाह हो।''

राजा ने कहा : ''आप लोगों का कथन सत्य है क्योंकि अन्न को ब्रह्म कहा गया है। अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं और अन्न से ही जगत जीवन धारण करता है। मैं प्रजा का हित करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करूँगा।''

राजा मांधाता इने-गिने व्यक्तियों को साथ ले सघन वन की ओर चल दिये। वहाँ जाकर मुख्य-मुख्य मुनियों और तपस्वियों के आश्रमों में गये। एक दिन उन्हें अंगिरा ऋषि के दर्शन हुए। उन पर दृष्टि पड़ते ही राजा हर्ष में भरकर अपने वाहन से नीचे उतरे और दोनों हाथ जोड़कर ऋषि के श्रीचरणों में प्रणाम किया। ऋषि ने भी 'स्वस्ति' कहकर राजा का अभिनंदन किया और राज्य की कुशलता पूछी। राजा ने अपनी कुशलता बताकर ऋषि का कुशलक्षेम पूछा।

तत्पश्चात् राजा ने कहा : ''भगवन् ! मैं धर्मानुकूल प्रणाली से प्रजा का पालन कर रहा था। फिर भी मेरे किसी कर्म के फलस्वरूप राज्य में वर्षा का अभाव हो गया है। आप मुझे वह उपाय कहिये जिससे राज्य में फिर से वर्षा हो।''

ऋषि बोले : ''राजन् ! भाद्रपद के शुक्ल पक्ष में विख्यात 'पद्मा' एकादशी होती है। उसके व्रत के प्रभाव से निश्चय ही उत्तम वृष्टि होगी। तुम प्रजा व परिजनों के साथ इसका व्रत करो।''

राज्य में लौटकर राजा ने समस्त प्रजा के साथ पद्मा एकादशी का व्रत किया। व्रत के प्रभाव से मेघ पानी बरसाने लगे। पृथ्वी जल से आप्लावित हो गयी व हरी-भरी खेती से सुशोभित होने लगी। सब लोग पुनः सुखी हो गये।''

श्रीकृष्ण कहते हैं : ''राजन् ! इस कारण इस उत्तम व्रत का अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए। इसके माहात्म्य को पढ़ने-सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।'' ('पद्म पुराण' से)

****

एक नयी साजिश !

साजिश को सच का जामा पहनाने के लिए पिछले ११ महीनों से हो रहे भरसक प्रयत्नों के बावजूद जब एक भी आरोप सिद्ध नहीं हो पाया तो इस बोगस केस को पेचीदा बनाने के लिए एक नया षड्यंत्र रचा गया। आरोप लगानेवाली लड़की के पिता को जान से मारने की धमकी देने के झूठे आरोप में जोधपुर पुलिस ने अर्जुन भाई को गिरफ्तार किया व बाद में छोड़ दिया गया।

इस संदर्भ में सच्चाई यह है कि होटल एन.एक्स.टी., जोधपुर के कमरा नं. २०४ में कुछ साधक पिछले ३ महीनों से रुके हुए हैं। उनसे मिलने अर्जुन भाई तथा अन्य साधक जाते रहते हैं। लड़की के बाप को यह बात पता थी।

न्यायालय में लड़की के माँ-बाप के बयान चालू थे, अतः उसी होटल के किसी कमरे में वे लोग भी आ के रुक गये। १८ जुलाई को अर्जुन भाई को वहाँ देख के लड़की के बाप ने मौके का फायदा उठाकर पुलिस को बुलाया और झूठा आरोप लगा के अर्जुन भाई को गिरफ्तार करवा दिया। बिकाऊ मीडिया ने इस खबर को मसाला लगाकर दिखाना चालू कर दिया। पुलिस ने एफआईआर में धारा १५१ लगायी, जो कि शांति भंग करने पर लगायी जाती है। साथ ही पुलिस ने यह लिखा है कि उसने अर्जुन भाई को होटल के स्वागत कक्ष (रिसेप्शन रूम) से गिरफ्तार किया, जब कि अखबारों व मीडिया में आया कि लड़की के बाप के कमरे से गिरफ्तार किया गया। सच्चाई जानते हुए भी बिकाऊ मीडिया के दबाव में पुलिस ने धाराएँ लगाकर गिरफ्तारी की।

सोचनेवाली बात है कि धमकी देनेवाला क्या खुद उनके पास रू-बरू जायेगा ? कभी नहीं। न्यायालय में इस एफआईआर व गिरफ्तारी के विरुद्ध चुनौती दी गयी है।

पूज्य बापूजी ने १८ जुलाई को ही मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा था : ''धीरज सबका मित्र है। सत्य की जय होगी। यह साजिश है। हमारे समर्थक और हम धमकी दें यह सम्भव ही नहीं है। हमारा अपना अनुभव है, हमारे समर्थक ऐसे नहीं हैं। हमारे समर्थक ऐसे धमकी देनेवालों में से होते तो इतने दिनों से, दस महीने से हम यहाँ हैं तो इतनी शांति कैसे है ? हमारे समर्थक तो लाठियाँ सहते हैं, हाथ जोड़ते हैं।...'' (श्री धर्मेन्द्र गुप्ता)

ऋषि प्रसाद ने बदला मेरा जीवन

- आचार्य श्री विकासजी, संस्कृत भाषा के विद्वान व भागवताचार्य

मैंने ८वीं की परीक्षा पास की थी। उसके बाद छुट्टियों के दिनों में हम ऐसे ही खेलते रहते थे। एक दिन बूढ़ी माताजी कोई पत्रिका पढ़ रही थीं। मैंने उत्सुकता से कहा : ''माताजी ! पत्रिका मुझे दीजिये, मैं भी देखूँ इसमें क्या है।'' उसमें बाबाजी का फोटो देखा तो पूछा : ''ये कौन हैं ?''

माताजी ने कहा : ''ये संत श्री आशारामजी बापू हैं।''

मैंने उनसे पत्रिका ले के पढ़ी और सच कहता हूँ, उसके बाद तो जीवन ही बदल गया। पहले मैं बहुत शरारती था। ऊधम करना, इधर-उधर की बातें करना, दिनभर बस खेलते ही रहना - सब सहजता से छूटता गया। जब बापूजी की वह पत्रिका पढ़ी, आत्मा-अनात्मा का विवेचन जो बापूजी इतने दिव्य वेदांत के सत्संग से सरल रूप में समझाते हैं, उससे मुझे बहुत लाभ हुआ।

उसमें बापूजी के सत्संग में लिखा था कि 'हम शरीर नहीं हैं।' मैंने एक-दो बार उसे पढ़ा तो सोचा : 'यह क्या बात है ! हम शरीर नहीं हैं तो और क्या हैं ? हम शरीर ही हैं तो यह क्यों, कैसे लिखा है ?' मेरे को बड़ा अचम्भा हुआ। मैं बार-बार उसको पढ़ता गया। और भी ऋषि प्रसाद की कई प्रतियाँ लीं, उनमें नयी-नयी चीजें पढ़ता रहा, सीखता रहा। प्रातःकाल उठकर करदर्शन करना, पृथ्वी को प्रणाम करना, सूर्य को अर्घ्य देना, तुलसी के पत्ते खाना आदि तथा गौमाता की महिमा - यह सब पढ़ा तो इससे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा।

जो प्रश्न था कि 'हम शरीर नहीं हैं' - यह भी धीरे-धीरे खुलता गया और ऐसी कृपा हुई कि जो जीवन की सार्थकता है उस ओर मैं अग्रसर हो गया।

बापू के बच्चे, नहीं रहते कच्चे

मैं ९वीं कक्षा का छात्र हूँ। दीक्षा के बाद नियमित जप, ध्यान व प्राणायाम तथा बाल संस्कार केन्द्र में जाने से मेरी स्मरणशक्ति, निर्णयशक्ति तथा एकाग्रता में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए।

दिसम्बर २०१२ की बात है, एक दिन मैं 'कौन बनेगा करोड़पति' शो देख रहा था। उसमें बच्चों के लिए स्पेशल ऑडिशन की बात बतायी गयी। मैंने भी ऑनलाइन अपना फॉर्म भर दिया और मुझे ऑडिशन के लिए चंडीगढ़ बुलाया गया।

इसी दौरान मैं अपने परिवार के साथ पूज्यश्री के दर्शन हेतु जम्मू गया। वहाँ बापूजी रेलगाड़ी में सवार होकर प्रसाद बाँट रहे थे। तब मैंने बापूजी से भावपूर्वक मन में प्रार्थना की कि 'मेरा चयन मुंबई के लिए हो जाय।' उसी समय एक तुलसी गोली का प्रसाद मेरे हाथों में आया। मुझे विश्वास हो गया कि मेरा चयन निश्चित है। घर लौटने पर पता चला कि मुझे हवाई जहाज से मुंबई बुलाया गया है। २१ दिसम्बर को वहाँ 'फास्टेस्ट फिंगर' राउंड में भारतवर्ष से आये १० बच्चों में मैं भी खड़ा था। उस समय मैं थोड़ा डर रहा था। तभी मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे पूज्य बापूजी मुझे कह रहे हों कि 'बेटा ! तू डर मत। मैं तेरे साथ हूँ। उद्यम, साहस, धैर्य से आगे बढ़ !' और उन्हींकी कृपा से मैं 'हॉट सीट' के लिए चुना गया। उस समय मैंने सद्गुरुदेव द्वारा प्राप्त सारस्वत्य मंत्र का मन में जप किया और एक-एक प्रश्न का जवाब देता गया।

घर आने पर माँ ने बताया कि उस दिन हमने 'श्री आशारामायण' के १०८ पाठ का आयोजन किया था। हमारे १०८ पाठ पूरे हुए और हम पर अभिनंदन की वर्षा होने लगी कि 'आपका बेटा २५ लाख रुपये जीत चुका है।' भक्तवत्सल गुरुदेव की कृपा से ही मुझे यह सफलता मिल सकी। - विनय शर्मा, पठानकोट

पाचन की तकलीफों में परम हितकारी

अदरक

आजकल लोग बीमारियों के शिकार अधिक क्यों हैं ? अधिकांश लोग खाना न पचना, भूख न लगना, पेट में वायु बनना, कब्ज आदि पाचन संबंधी तकलीफों से ग्रस्त हैं और इसीसे अधिकांश अन्य रोग उत्पन्न होते हैं। पेट की अनेक तकलीफों में रामबाण एवं प्रकृति का वरदान है अदरक। स्वस्थ लोगों के लिए यह स्वास्थ्यरक्षक है। बारिश के दिनों में यह स्वास्थ्य का प्रहरी है।

सरल है आँतों की सफाई व पाचनतंत्र की मजबूती

शरीर में जब कच्चा रस (आम) बढ़ता है या लम्बे समय तक रहता है, तब अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। अदरक का रस आमाशय के छिद्रों में जमे कच्चे रस एवं कफ को तथा बड़ी आँतों में जमे आँव को पिघलाकर बाहर निकाल देता है तथा छिद्रों को स्वच्छ कर देता है। इससे जठराग्नि प्रदीप्त होती है और पाचन-तंत्र स्वस्थ बनता है। यह लार एवं आमाशय का रस दोनों की उत्पत्ति बढ़ाता है, जिससे भोजन का पाचन बढ़िया होता है एवं अरुचि दूर होती है।

* आसान घरेलू प्रयोग *

स्वास्थ्य व भूख वर्धक, वायुनाशक प्रयोग

रोज भोजन से पहले अदरक को बारीक टुकड़े-टुकड़े करके सेंधा नमक के साथ लेने से पाचक रस बढ़कर अरुचि मिटती है। भूख खुलती है, वायु नहीं बनती व स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

रुचिकर, भूखवर्धक, उदररोगनाशक प्रयोग

१०० ग्राम अदरक की चटनी बनायें एवं १०० ग्राम घी में उसे सेंक लें। लाल होने पर उसमें २०० ग्राम गुड़ डालें व हलवे की तरह गाढ़ा बना लें। (घी न हो तो २०० ग्राम अदरक को कद्दूकश करके २०० ग्राम चीनी मिलाकर पाक बना लें।) इसमें लौंग, इलायची, जायपत्री का चूर्ण मिलायें तो और भी लाभ होगा। वर्षा ऋतु में ५ से १० ग्राम एवं शीत ऋतु में १०-१० ग्राम मिश्रण सुबह-शाम खाने से अरुचि, मंदाग्नि, आमवृद्धि, गले व पेट के रोग, खाँसी, जुकाम, दमा आदि अनेक तकलीफों में लाभ होता है। भूख खुलकर लगती है। बारिश के कारण उत्पन्न बीमारियों में यह अति लाभदायी है।

अपच : (१) भोजन से पहले ताजा अदरक रस, नींबू रस व सेंधा नमक मिलाकर लें एवं भोजन के बाद इसे गुनगुने पानी से लें। यह कब्ज व पेट की वायु में भी हितकारी है।

(२) अदरक, सेंधा नमक व काली मिर्च को चटनी की तरह बनाकर भोजन से पहले लें।

खाँसी, जुकाम, दमा : अदरक रस व शहद १०-१० ग्राम दिन में ३ बार सेवन करें। नींबू का रस २ बूँद डालें तो और भी गुणकारी होगा।

बुखार : तेज बुखार में अदरक का ५ ग्राम रस एवं उतना ही शहद मिलाकर चाटने से लाभ होता है। इन्फ्लूएंजा, जुकाम, खाँसी के साथ बुखार आने पर तुलसी के १०-१५ पत्ते एवं काली मिर्च के ६-७ दाने २५० ग्राम पानी में डालें। इसमें २ ग्राम सोंठ मिलाकर उबालें। स्वादानुसार मिश्री मिला के सहने योग्य गर्म ही पियें।

वातदर्द : १० मि.ली. अदरक के रस में १ चम्मच घी मिलाकर पीने से पीठ, कमर, जाँघ आदि में उत्पन्न वातदर्द में राहत मिलती है।जोडों का दर्द : २ चम्मच अदरक रस में १-१ चुटकी सेंधा नमक व हींग मिला के मालिश करें।

गठिया : १० ग्राम अदरक छील के १०० ग्राम पानी में उबाल लें। ठंडा होने पर शहद मिलाकर पियें। कुछ दिन लगातार दिन में एक बार लें। यह प्रयोग वर्षा या शीत ऋतु में करें।

गला बैठना : अदरक रस शहद में मिलाकर चाटने से बैठी आवाज खुलती है व सुरीली बनती है।

सावधानी : रक्तपित्त, उच्च रक्तचाप, अल्सर, रक्तस्राव व कोढ़ में अदरक न खायें। अदरक को फ्रिज में न रखें, रविवार को न खायें।

करेले के उत्तम गुणों का लाभ लेने हेतु कैसे बनायें करेले की सब्जी ?

बरसात के दिनों में पाचनक्रिया मंद होने से आहार अच्छी तरह पच नहीं पाता। ऐसी दशा में पाचक औषधियाँ लेने के बजाय केवल निम्न विधि से बनायी गयी करेले की सब्जी खायें और इसके आशातीत फायदे स्वयं ही आजमायें।

लाभ : यह भूख, रोगप्रतिकारक शक्ति एवं हीमोग्लोबिन बढ़ाती है। अजीर्ण, बुखार, दर्द, सूजन, आमवात, वातरक्त, यकृत (लीवर) व प्लीहा की वृद्धि, कफ एवं त्वचा के रोगों में लाभदायक है। बच्चों के हरे-पीले दस्त, पेट के कीड़े व मूत्र रोगों से रक्षा करती है। विशेष : यकृत की बीमारियों एवं मधुप्रमेह (डायबिटीज) से ग्रस्त लोगों के लिए यह रामबाण है।

विधि : प्रायः सब्जी बनाते समय करेले के हरे छिलके व कड़वा रस निकाल दिया जाता है। इससे करेले के गुण बहुत कम हो जाते हैं।

छिलके उतारे बिना अच्छे-से करेलों को धोयें और काट लें। फिर उन्हें कुकर में डाल के थोड़ा पानी, नमक-मिर्च, मसाला और घी या तेल डालें। बंद करके धीमी आँच में पकायें। एक-आधी सीटी पर्याप्त है। हो गयी सब्जी तैयार !

सेवन की मात्रा : ५० से १५० ग्राम

इस तरीके से सब्जी बनाने से करेले के गुणकारी अंश अलग नहीं हो पाते और सेवनकर्ता को करेले के सभी गुण प्राप्त हो जाते हैं।

तिथि अनुसार आहार-विहार

ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म खंड (२७.२९-३४) में आता है :

* प्रतिपदा को कुष्मांड (कुम्हड़ा, पेठा) न खायें क्योंकि यह धन का नाश करनेवाला है।
* द्वितीया को बृहती (वनभाँटा, छोटा बैंगन या कटेहरी) खाना निषिद्ध है।
* तृतीया को परवल खाना शत्रुवृद्धि करता है। * चतुर्थी को मूली खाने से धन-नाश होता है।
* पंचमी को बेल खाने से कलंक लगता है। * षष्ठी को नीम-भक्षण (पत्ती, फल खाने या दातुन मुँह में डालने) से नीच योनियों की प्राप्ति होती है। * सप्तमी को ताड़ का फल खाने से रोग बढ़ते हैं तथा शरीर का नाश होता है।
* अष्टमी को नारियल का फल खाने से बुद्धि का नाश होता है। * नवमी को लौकी खाना गोमांस के समान त्याज्य है। * एकादशी को शिम्बी (सेम), द्वादशी को पूतिका (पोई) तथा त्रयोदशी को बैंगन खाने से पुत्र का नाश होता है।
* अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति, चतुर्दशी व अष्टमी, रविवार, श्राद्ध और व्रत के दिन स्त्री-सहवास एवं तिल का तेल खाना व लगाना निषिद्ध है।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, ब्रह्म खंड : २७.३७-३८) इससे स्वभाव क्रोधी होता है और बीमारी जल्दी आती है।

* रविवार के दिन मसूर की दाल, अदरक और लाल रंग की सब्जी नहीं खानी चाहिए।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्ण खंड : ७५.६१)

ये खाने व लाल बल्ब आदि से घर में झगड़े होते हैं एवं स्वभाव में क्रोध व काम पैदा होता है।

* सूर्यास्त के बाद कोई भी तिलयुक्त पदार्थ नहीं खाना चाहिए। (मनुस्मृति : ४.७५)
* सावन में साग और भादों में दही का सेवन वर्जित है। कहावत भी है :

भादों की दही भूतों को, कार्तिक की दही पूतों को।

बेजोड़ श्रद्धा का दर्शन, मिट्टी भी बन गयी चंदन

जोधपुर में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा पर्व पर देश-विदेश से आनेवाले भक्तों का गुरु-दर्शन करके ही अन्न-जल लेने का व्रत रहा है। ऐसा व्रत किसीका १० साल से तो किसीका २० साल से और किसीका ४०-४५ सालों से चला आ रहा है।

पूज्य बापूजी ने भक्तों को संदेश दिया था कि ''सभी भक्त जोधपुर आने का आग्रह न रखें। जो जहाँ हैं वहाँ के नजदीकी आश्रम में मानसिक पूजा, जप आदि करके गुरुपूनम मनायें।'' फिर भी प्रतिकूलताओं की परवाह किये बिना गुरु-दर्शन के लिए तड़प रहे गुरुप्रेमी अपने गुरु के दर्शन किये बिना नहीं रह पाये।

भीषण गर्मी और अंगारे बरसाती धूप में भूख-प्यास की परवाह किये बगैर रास्ते के किनारे ५-५, ६-६ घंटे गुरु-दर्शन के लिए शांतिपूर्वक खड़े हजारों-हजारों लोग... कोई प्रणाम कर रहा है तो कोई आरती सजा के खड़ा है... कहीं आँखें बंद हैं तो कहीं आँखें नम हैं... कोई रास्ते पर सिर झुकाये खड़ा है तो कोई जमीन की धूलि को मस्तक पर लगा रहा है - यह अभूतपूर्व नजारा था जोधपुर कारागृह व न्यायालय के परिसर का। गुरुपूनम के ५-६ दिन पहले से लेकर पर्व के बाद ५-६ दिनों तक भक्तों का हुजूम बना रहा।

महिलाओं व युवतियों की भारी संख्या ने मानो षड्यंत्रकारियों की साजिश की विफलता को सिद्ध कर दिया था। गाड़ी में से ही बापूजी की एक झलक मिलने के बाद कई भक्त फूट-फूटकर रोने लगे तो कई रोते हुए सड़क पर मत्था टेकने लगे। जहाँ से बापूजी की गाड़ी गुजरी उस रास्ते की मिट्टी भी चंदन बनकर हजारों ललाटों पर शोभित हुई। साधकों के आँसू बरस-बरसकर मानो यही कह रहे थे कि 'आखिर क्यों हमारे निर्दोष बापूजी को सताया जा रहा है?' इन लोगों की गुरुनिष्ठा और आँसू देखकर वहाँ खड़े अन्य लोग भी द्रवीभूत हो गये।

१२ जुलाई को साधकों को जेल के पास जाने से रोका गया तो उन्होंने जेल जानेवाले रास्ते पर ही फूलमालाएँ चढ़ायीं, आरती की एवं कई किलोमीटर चलकर जेल की परिक्रमा की। देश-विदेश से आये साधकों ने जोधपुर आश्रम में सामूहिक पादुका-पूजन किया एवं प्रार्थना की।

बापूजी की हस्ती ने अनजान लोगों को भी सोचने पर मजबूर कर दिया कि 'बापूजी के बारे में जो भी दुष्प्रचार किया गया है, निश्चित ही उससे हटकर सच्चाई कुछ और ही है!'

इतना बड़ा षड्यंत्र रचने के बावजूद भी साधकों की विशाल संख्या देख निश्चित ही श्रद्धा तोड़नेवालों की आँखें फटी रह गयी होंगी। समाचार चैनलवालों को भी दिखाना पड़ा कि 'आशारामजी बापू पिछले १० महीनों से जेल में हैं, इसके बावजूद उनके भक्तों की श्रद्धा व विश्वास में कोई कमी नहीं आयी है।'

अहमदाबाद आश्रम में गुरुपूनम पर भक्तों की पुकार 'आओ अब गुरुदेव !'

पिछले ४२ वर्षों से अहमदाबाद आश्रम में पूज्य बापूजी के सान्निध्य में गुरुपूर्णिमा महापर्व मनाया जाता रहा है। इस बार पिछले लगभग १ साल से चल रहे इस घोर षड्यंत्र ने साधकों से बापूजी को बाह्य रूप से भले दूर किया है पर उन्हें भीतर से दूर करने में विश्व की कोई ताकत समर्थ नहीं है। गुरुपूनम के कुछ दिन पहले से ही अहमदाबाद आश्रम में साधकों का आगमन शुरू हो गया था। हर वर्ष की तरह सागवाड़ा (राज.) से चली पदयात्रा गुरुपूनम के दिन अहमदाबाद आश्रम पहुँची।

गुरुपूर्णिमा का कार्यक्रम सुबह ५ बजे से शुरू हो गया। साधकों-भक्तों ने गुरुदेव की शीघ्र दर्शनप्राप्ति का संकल्प कर बड़दादा तथा मोक्ष कुटीर की परिक्रमा की। शांति वाटिका से मोक्षदायी, परम पवित्र श्रीगुरु-चरणपादुका मंगल कलश यात्रा के साथ आश्रम लायी गयीं। सत्संग भवन एवं पूरा आश्रम भक्तों की भीड़ से भर गया था। सत्संग भवन में पादुका-पूजन के बाद मानस-पूजा प्रारम्भ हुई। पूजन करते-करते भक्तों के हृदय में छुपी गुरु-दर्शन की तड़प शब्दों का साथ पाकर पुकार में बदल गयी और मन में बसे भाव अश्रुधाराओं का रूप धरकर बरस पड़े।

धीरे-धीरे साधक शांत हुए और पूरे सत्संग भवन में नीरव शांति छा गयी। कुछ समय बाद पूज्य बापूजी का ऑडियो सत्संग प्रारम्भ हुआ। जोधपुर से पूज्य बापूजी ने अपने हाथों का स्पर्श किया हुआ गंगाजल और प्रसाद अपने प्यारे साधकों के लिए भिजवाया था। उस गंगाजल को पंचगव्य, पंचामृत, भोजन तथा बड़दादा के जल में मिला दिया गया, जिससे कोई भी भक्त इस महाप्रसाद से वंचित न रह जाय।

दूसरे सत्र में पूज्य बापूजी की सुपुत्री श्री भारतीदेवीजी और सभी साधकों की गुरुमाता लक्ष्मीदेवीजी सत्संग भवन में पधारीं। गुरुमाता ने आते ही सबसे पहले गुरु-पादुका पूजन किया। श्री लक्ष्मीदेवीजी ने कहा : ''आप लोग रोज संकल्प करना कि स्वामीजी जल्दी बाहर आयें।'' तत्पश्चात् भारतीदेवीजी का सत्संग हुआ। शाम के सत्र में भक्तों ने शतकुंडी महायज्ञ में भाग लिया। उसके बाद पूज्यश्री का विडियो सत्संग चला, जिससे साधकों को बापूजी के सान्निध्य की याद ताजा हो गयी। इस दिन सुबह से लेकर शाम तक लगातार भंडारा चलता रहा।

हजारों स्थानों पर मना गुरुपूर्णिमा महापर्व

भारत ही नहीं विदेशों में भी गुरुपूर्णिमा महापर्व पर मानस-पूजन, श्रीपादुका-पूजन, विडियो सत्संग, श्री आशारामायण पाठ, भजन-कीर्तन, जप, हवन आदि कार्यक्रम व्यापक स्तर पर हुए। साधकों ने बापूजी व नारायण साँईंजी की शीघ्र रिहाई हेतु आर्त भाव से प्रार्थना की।

सूरत, करोलबाग-दिल्ली, भोपाल, इंदौर, लखनऊ, लुधियाना, जम्मू, कठुआ (जम्मू-कश्मीर), बदलापुर व रायता जि. ठाणे (महा.), केसरापल्ली (ओड़िशा), पानीपत (हरि.) आदि स्थानों पर आश्रम के वक्ताओं के सत्संग-कार्यक्रम हुए।

पंचेड (म.प्र.) के निकट शैलेश रावटी गाँव जि. रतलाम में भंडारा व कीर्तन यात्रा सम्पन्न हुई। ग्वालियर आश्रम (म.प्र.) में आदिवासियों में भंडारा तथा तिरपाल का वितरण हुआ। गोरेगाँव-मुंबई आश्रम द्वारा आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालयों में भोजन-प्रसाद, नोटबुक, रूमाल, कम्पास बॉक्स आदि का वितरण हुआ। लखनऊ आश्रम द्वारा गरीबों में भंडारा तथा वस्त्र, बर्तन, मिठाई आदि का वितरण हुआ। जालंधर की रविदास मंदिर बस्ती में निःशुल्क मेडिकल कैम्प लगाया गया। पेटलावद जि. झाबुआ (म.प्र.) के गरीबों में कपड़ा-वितरण तथा गोधरा (गुज.) व निवाई (राज.) में भंडारा व अनाज-वितरण हुआ। खडगपुर (प.बं.) में ब्राह्मी शरबत वितरण एवं अस्पताल में फल-वितरण किया गया। पुष्कर (राज.) में पलाश शरबत का वितरण हुआ। प्रयागराज संगम क्षेत्र में 'युवा सेवा संघ' द्वारा जनता के लिए भोजन-प्रसाद की व्यवस्था की गयी। सुसनेर जि. आगर-मालवा (म.प्र.) में विधायक श्री मुरलीधर पाटीदार एवं पूर्व विधायक श्री बद्रीलाल सोनी ने गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम में भाग लिया। हैदराबाद के गरीबों में राशन-वितरण तथा हिसार (हरि.) में राशन कार्ड व अनाज वितरण हुआ। 'महिला उत्थान मंडल' द्वारा भुवनेश्वर (ओड़िशा) में सुप्रचार यात्रा व कोटा-रायपुर (छ.ग.) के विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण हुआ।

विदेशों में भी हुए विभिन्न कार्यक्रम

गुरुपूर्णिमा महापर्व पर ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी के पूजन के लिए टोरंटो (कनाडा), वॉटसनविले (कैलिफोर्निया), बोस्टन, न्यूजर्सी, शिकागो, वॉशिंगटन आदि विभिन्न स्थानों पर विदेशों में भी श्रद्धालुओं का विशाल समुदाय उमड़ा। काठमांडू (नेपाल) में हवन हुआ, विशाल प्रभातफेरी निकाली गयी तथा वृद्धाश्रम में फल-वितरण किया गया।

गुरुपूर्णिमा पर देश के सभी आश्रमों में उमड़े जनसागर तथा साधकों की अटूट आस्था को देखकर बापूजी की निंदा में लगे विभिन्न प्रचार-प्रसार माध्यमों को भी दिखाना एवं लिखना पड़ा कि इतने व्यापक कुप्रचार पर भी

अविरत जारी हैं समाजसेवा के कार्य

अम्बाला (हरि.) के गरीबों में लंगर सेवा एवं टोपी व जूता वितरण, खड़गपुर (प. बंगाल) में भंडारा व अन्नदान तथा छिंदवाड़ा (म.प्र.), फरीदाबाद (हरि.), भावनगर (गुज.), बिलासपुर (हि.प्र.) आदि में छाछ व शरबत वितरण किया गया। भावनगर (गुज.) के विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण हुआ।

राष्ट्र-जागृति यात्राएँ

भारतीय संस्कृति के आधारस्तम्भ संतों पर चल रहे षड्यंत्र के प्रति समाज को सचेत करने के उद्देश्य से राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र-जागृति यात्राएँ निकाली जा रही हैं। राजस्थान के लखेरी, बूँदी, कापरेन, केशोरायपाटन जि. बूँदी, सुल्तानपुर, इटावा, सांगोद, रामगंजमंडी जि. कोटा, दौसा, झालावाड़, भीलवाड़ा, सीसवाली जि. बाराँ, अन्ता, चित्तौड़गढ़, सुनेल, भवानीमंडी जि. झालावाड़, देवली जि. टोंक, बस्सी, रावतभाटा जि. चित्तौड़गढ़, लालसोट जि. दौसा, गंगापुर जि. भीलवाड़ा, शिवगंज जि. सिरोही, सुमेरपुर, बाली, साण्डेराव, रानी, फालना, मारवाड़, सोजत सिटी, पाली, रोहट जि. पाली, जोधपुर, जयपुर, बाँसवाड़ा, आमेट व देवगढ़ जि. राजसमंद, कोटा, उदयपुर, झोटवाड़ा आदि स्थानों पर राष्ट्र-जागृति यात्राएँ निकाली गयीं। ये यात्राएँ गुरुपूनम से गुजरात व मध्य प्रदेश में भी चालू हो चुकी हैं।

जगन्नाथ रथयात्रा पर सेवाकार्य

भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के अवसर पर पूज्य बापूजी के कर्मयोगी साधकों ने सेवा का मौका खोज ही लिया। जगन्नाथपुरी (ओड़िशा) में निकाली गयी शोभायात्रा में बड़ी संख्या में साधक सहभागी हुए। यात्रा के दौरान लोगों में पलाश शरबत का वितरण किया गया। डाकोर जि. खेडा (गुज.) व अहमदाबाद में रथयात्राओं के लिए विशेष प्रसाद व शरबत की व्यवस्था की गयी। भावनगर (गुज.), फरीदाबाद, लखनऊ, दिल्ली आदि स्थानों पर विशाल शोभायात्राएँ निकाली गयीं।

साधकों की दृढ़ निष्ठा से कुप्रचार सफाया

सुप्रचार अभियान के अंतर्गत ऋषि प्रसाद सेवा मंडल, दिल्ली द्वारा तुगलकाबाद व प्रहलादपुर में ऋषि प्रसाद, सच्चाई पर्चे, वीसीडी आदि सामग्री का वितरण हुआ और लोगों तक सच्चाई पहुँची। ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) में अमरनाथ यात्रियों में सुप्रचार सामग्री का वितरण हुआ। जम्मू में विडियो प्रोजेक्टर द्वारा बापूजी का सत्संग व सुप्रचार जन-जन तक पहुँचाने की सेवा सतत जारी है। उल्हासनगर में 'साधक स्नेह-सम्मेलन' तथा लुधियाना में 'ज्योत-से-ज्योत जगाओ सम्मेलन' में बड़ी संख्या में साधकों ने भाग लिया।

महिला सर्वांगीण विकास शिविर

महिला सशक्तीकरण हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर ये शिविर आयोजित हो रहे हैं, जैसे - फरीदाबाद, करोलबाग-दिल्ली, अहमदाबाद तथा छत्तीसगढ़ में राजनांदगाँव, भिलाई, कवर्धा, भाटापारा जि. बलौदा बाजार, राजिम जि. गरियाबंद, धमतरी, बिलासपुर आदि । अहमदाबाद में शिविरार्थी महिलाओं को विशेषज्ञों द्वारा चिकित्सकीय परामर्श भी दिया गया।

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्न ऋषि प्रसाद के इसी अंक पर आधारित हैं। उत्तरों हेतु पत्रिका को ध्यान से पढ़ें। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) तेजस्वी संतानप्राप्ति हेतु क्या करें ?
(२) राजकाज का काम भी ईश्वरोपासना के रूप में कौन करती थीं ?
(३) ऋषि प्रसाद महामंत्र के मंत्रद्रष्टा कौन हैं ?
(४) आवाज सुरीली बनाने के लिए किसमें क्या मिलाकर चाटना चाहिए ?

अटूट श्रद्धा और आस्था के साथ भारत ही नहीं, विदेशों में भी मनाया गया गुरुपूर्णिमा महापर्व

लुधियाना, नेपालगंज (नेपाल), रायपुर, कैलिफोर्निया

पटना, भीलवाड़ा (राज.), भुवनेश्वर, शिकागो

पेटलावद (म.प्र.), केसरापल्ली (ओड़िशा), लड्डूगाँव, जि. कालाहांडी (ओड़िशा), काठमांडू (नेपाल)

इंदौर, रायता-मुंबई, बैंगलोर, सागर (म.प्र.)

बलिया (उ.प्र.), ग्वालियर (म.प्र.) के गरीबों में भंडारा, विद्यार्थियों में नोटबुक-वितरण, जबलपुर (म.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

पूज्य बापूजी की जीवन झाँकी व सेवाकार्यों पर आधारित रंगीन पुस्तिका 'सेवा दर्पण' और सुप्रचार की नयी पुस्तिका 'सत्यमेव जयते' अपने नजदीकी आश्रम या सत्साहित्य सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७४९-५०-५१

गुरुपूर्णिमा महोत्सव, अहमदाबाद

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014
Date of Publication: 1st Aug 2014

गुरुपूर्णिमा पर साधकों की गुरुमाता लक्ष्मीदेवीजी ने पूज्य बापूजी की श्रीचरणपादुका का पूजन किया।
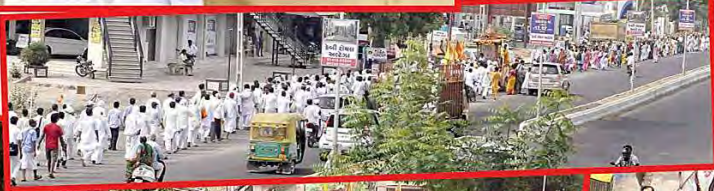
भव्य सुप्रचार कलशयात्रा, शतकुंडी महायज्ञ, पादुका-पूजन, मानस गुरुपूजन, प्रार्थना व सत्संग-श्रवण करके भक्तों ने मनायी गुरुपूर्णिमा।

गुरुपूर्णिमा पर गुरुनिष्ठा का लहराता महासागर

'ऋषि प्रसाद' की २४वीं जयंती पर आयोजित सम्मेलन में ऋषि प्रसाद का वितरण करनेवाले पुण्यात्माओं ने इसे जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

ऋषि प्रसाद स्मृतिचिह्न प्राप्त करते पुण्यात्मा

'ऋषि प्रसाद स्मृतिचिह्न योजना' पढ़ें पृष्ठ १० पर